www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 फरवरी 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 19 फरवरी 2017 से 25 फरवरी 2017

फाल्गुन कृ. – 08 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 63, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज पश्चिम बंगाल के तत्वावधान में

'आओ संसार सुखी बनाएँ' की उद्देश्य पूर्ति हेतु 51 कुंडीय विश्व कल्याण यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, पश्चिम बंगाल के तत्वावधान में गत 6–7 फरवरी को डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर, पश्चिम बंगाल में 'आओ संसार सुखी बनायें' 51 कुंडीय विश्व कल्याण हेतु यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारे अध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी उपस्थित रहे। अन्य अतिथियों के रूप में श्रीमती मणि सूरी, श्री एस. के. शर्मा निदेशक, प्रकाशन विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं डॉ. निशा पेशिन निदेशिका, पब्लिक स्कूल–II, सहित संन्यासी, विद्वान, अन्य प्रांतों से आए क्षेत्रीय निदेशक, सह क्षेत्रीय निदेशक, प्राचार्य एवं अध्यापक वर्ग सहित लगभग 1000 अतिथियों ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को सफल बनाया।

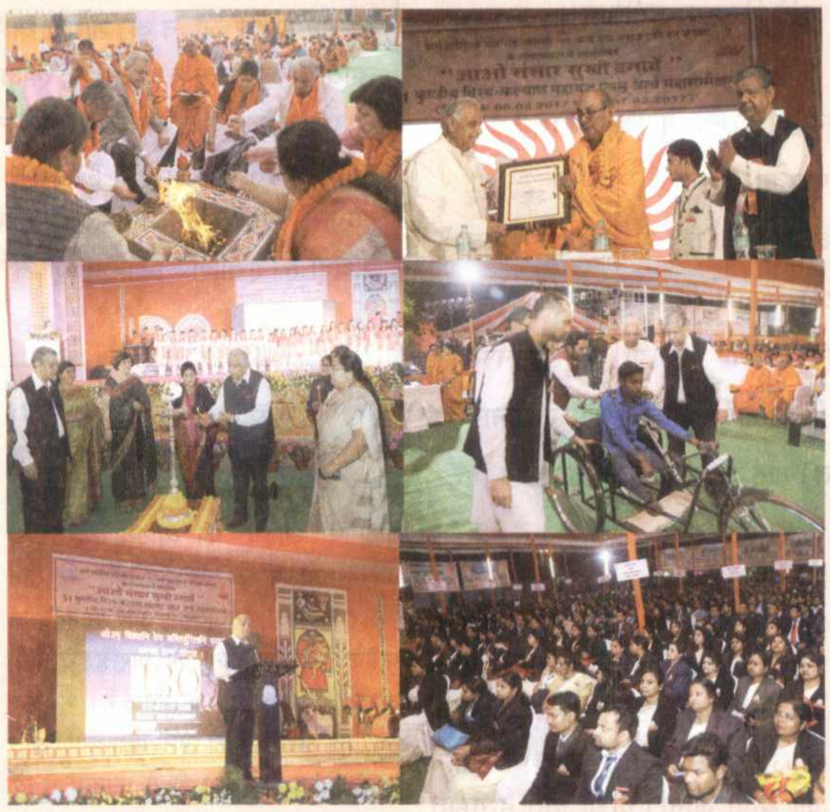

दो दिवसीय आयोजन में पधारे मुख्य अतिथि आर्यरत्न श्री पूनम सूरी एवं श्रीमती मणि सूरी का बंगाल की संस्कृति के अनुरूप पारंपरिक ढंग से भव्य स्वागत किया गया। प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, पश्चिम बंगाल, सुश्री पापिया मुखर्जी व अन्य पदाधिरियों ने मुख्य अतिथि सहित मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का अभिवादन कर उन्हें सम्मानित किया। अध्यक्ष, डी.ए.वी. दुर्गापुर प्रबंध समिति श्री श्रुतिकांत पाल ने मुख्य अतिथि आर्यरत्न श्री पूनम सूरी को मान पत्र भेंट किया। डी.ए.वी. गान, वेद मंत्रों पर नृत्य एवं बंगाल की छवि को दर्शाते हुए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

तत्पश्चात मान्य श्री पूनम सूरी जी ने 16 विद्यालयों से आए लगभग 1000 शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने आर्य समाज के स्तंभ महात्मा हंसराज, महात्मा आनन्द स्वामी, गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय आदि के तप एवं त्याग को नमन करते हुए उनके मार्ग को अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। दूसरे दिन महासम्मेलन का शुभारंभ 51 कुंडीय महायज्ञ से हुआ और वैदिक मंत्रों की गूँज के साथ सभी आर्यजन भावविभोर हो उठे एवं संपूर्ण प्रांगण यज्ञमय हो उठा।

तत्पश्चात सम्मानीय श्री पूनम सूरी जी ने संपूर्ण आयोजन की अध्यक्षता निभाने वाले स्वामी धर्मानंद सरस्वती सहित स्वामी व्रतांनद सरस्वती, आर्य प्रह्लाद गिरि, खुशहाल चंद्र आर्य एवं चांद रतन दमानी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में आर्यरत्न श्री पूनम सूरी ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते हुए सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने संध्या, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा को जीवन में धारण कर, जीवन सुखी बनाने का सरल एवं श्रेष्ठ मार्ग अपनाने पर बल दिया।

इसी अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों सहित मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने अपने कर कमलों से दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल एवं आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को सिलाई मशीन प्रदान कर समाज सेवा का महत्व समझाया।

'आओ जीवन सुखी बनायें' कार्यक्रम के आयोजन एवं इसकी परम आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, एवं आर्य युवा समाज, पश्चिम बंगाल, सह क्षेत्रीय निदेशिका सुश्री पापिया मुखर्जी ने आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी जी सहित समस्त आर्य बंधुओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने डी.ए.वी. संस्था को अपने प्रयासों से उन्नत बनाने, नैतिकता एवं जीवनमूल्यों को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान देने एवं एंग्लो वैदिक शिक्षा पद्धति के उचित निर्वाह हेतु अपनी कटिबद्धता का संकल्प लिया।

प्रधान जी ने डी.ए.वी. घुमारवीं में नैतिक शिक्षा प्रोत्साहन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया

हिमाचल प्रदेश के डी.ए.वी. विद्यालय घुमारवीं में विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय नैतिक शिक्षा प्रोत्साहन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रदेश भर के 15 डी.ए.वी. विद्यालयों में अध्ययनरत 170 विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने आर्य समाज, देशभक्ति व युवाओं में गिरते नैतिक मूल्य आदि विषयों पर अपने–अपने विचार रखे। छात्रों ने वैदिक भजन, भाषण, रूपचित्र और प्रदर्शनी आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस अवसर पर आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति समिति नई दिल्ली विशेष

रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने प्रथम, द्वितीय तथा अन्य प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

भाषण प्रतियोगिता में–आयुषी शर्मा, डी.ए.वी. बरमाणा, प्रथम, साक्षी डी.ए.वी. घुमारवीं तथा रितिका राणा, डी.ए.वी. नादौन, द्वितीय स्थान पर रहीं। भजन प्रतियोगिता में–डी.ए.वी. मण्डी प्रथम तथा डी.ए.वी. घुमारवीं, ने दूसरा स्थान हासिल किया। रूपचित्र प्रतियोगिता में –आकर्षित जैन, डी.ए.वी. नादौन, प्रथम, आदित्य ठाकुर, डी.ए.वी. घुमारवीं, तथा कीर्ति राणा, डी.ए.वी. बरमाणा दूसरे स्थान पर रहे। प्रदर्शनी में डी.ए.वी. हमीरपुर ने प्रथम, डी.ए.वी. घुमारवीं ने द्वितीय स्थान हासिल किया।

इस अवसर पर शिक्षा निदेशिका, श्रीमती जे. काकड़िया जी, तथा हिमाचल के जोन–1, जोन–सी, जोन–ई तथा मण्डी जोन के क्षेत्रीय निदेशक श्रीमती पी. सोफत, श्री एस.पी. अरोड़ा, श्रीमती रमा परवान तथा श्री पी.सी. वर्मा जी सहित विभिन्न विद्यालयों से आए हुए प्रधानाचार्य भी उपस्थित थे। माननीय प्रधान जी ने उपस्थित सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को जीवन में वैदिक मंत्रों के सार को उतारने की प्रेरणा दी तथा अपने आशीर्वचनों से सभी का मार्गदर्शन किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 19 फरवरी 2017 से 25 फरवरी 2017

अनुशासन ऐसे भी

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं ह्यप्राट्, स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः।
एतद्वै भद्रमनुशासनस्य, उत स्रुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम्।।

ऋग् १०.३२.७

ऋषिः **कवषः ऐलूषः**। देवता **विश्वेदेवाः**। छन्दः **भुरिक् पंक्तिः**, **व्यूहेन त्रिष्टुप् वा।**

● **(अक्षेत्रवित्)** अक्षेत्रज्ञ, **(क्षेत्रविदं)** क्षेत्रज्ञ से, **(हि)** ही, **(अप्राट्)** पूछता है।, **(क्षेत्रविदा)** क्षेत्रज्ञ से, **(अनुशिष्टः)** उपदेश किया हुआ, **(सः)** वह, **(प्र एति)** प्रकृष्ट दिशा में चल पड़ता है।, **(एतत्)** यह, **(वै)** ही, **(अनुशासनस्य)** अनुशासन का, **(भद्रम्)** श्रेष्ठ प्रकार [है]।, [इसी मार्ग से मनुष्य], **(अञ्जसीनाम्)** अर्थव्यंजिका वेदवाणियों के, **(स्रुतिम् उत)** मार्ग को भी, **(विन्दति)** प्राप्त कर लेता है।

● क्या तुम 'अनुशासन' का श्रेष्ठ प्रकार जानना चाहते हो? जो जिस क्षेत्र का विद्वान् होता है, वह उस क्षेत्र का 'क्षेत्रवित्' कहाता है, और जिसका उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं होता, वह उस क्षेत्र की दृष्टि से 'अक्षेत्रवित्' है। उस क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अक्षेत्रवित् मनुष्य क्षेत्रवित् के पास जिज्ञासाभाव से पहुँचता है और उससे प्रश्न करता है। क्षेत्रवित् से अनुशिष्ट होकर वह ज्ञानी हो जाता है और उस ज्ञान को क्रिया रूप में भी परिणत करता हुआ प्रकृष्ट दिशा में चल पड़ता है। यही अनुशासन या उपदेश का श्रेष्ठ प्रकार है। इस अनुशासन-विधि का विश्लेषण करने पर शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम बात यह सामने आती है कि जिस विषय का ज्ञान प्राप्त करना हो, उस विषय के 'क्षेत्रवित्' या विशेषज्ञ के ही पास जाना चाहिए, अपरिपक्व ज्ञानवाले के पास नहीं। दूसरी बात है 'अक्षेत्रवित्' का स्वयं ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा से समित्पाणि होकर गुरु के पास पहुँचना। अ-जिज्ञासु उपदेश का अधिकारी नहीं है। तीसरी बात है प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञान-प्रदान अर्थात् जिज्ञासु का प्रश्न करना और शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया जाना, न कि शिक्षक द्वारा बलात् शिष्य पर ज्ञान का थोपा जाना। चौथी बात है गृहीत ज्ञान को आचरण में भी लाना। यही अनुशासन, शिक्षण या उपदेश या सही वैदिक मार्ग है। इस मार्ग से अनुशासन होने पर विविध विद्याओं के गम्भीर-से-गम्भीर रहस्य जिज्ञासु से सम्मुख स्पष्ट हो जाते हैं। वेदवाणी के अन्दर जो वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य अर्थ छिपे हुए हैं और जिन जीवन-मार्गों का उपदेश वेद देते हैं, उन्हें आत्मसात् करने की भी यही विधि है।

अध्यात्म-दृष्टि से सर्वज्ञ परमात्मा क्षेत्रवित् है और अल्पज्ञ जीवात्मा अक्षेत्रवित्। परमात्मा के पास आत्मा के सब प्रश्नों का समाधान है। आश्यकता इसकी है कि आत्मा जिज्ञासु बनकर उससे पूछे। हे क्षेत्रवित् परमेश्वर! तुम गुरुओं के गुरु हो, हमारे भी गुरु बनो, तुम्हारा अनुशासन ही हमें सन्मार्ग पर चला सकता है।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि मनुष्य को आयु, प्राण, सन्तान, घोड़े, हाथी, मोटर-कारें और वायुयान सब कुछ मिल जाए तो भी इच्छा पूरी नहीं होती। कीर्ति की इच्छा मन में रहती है। गायत्री का जाप करने वाले के मुख-मण्डल पर तेज होता है। परमात्मा ने प्रसन्न होकर साँसों का यह चन्दन से पूर्ण वन हमें दिया था। हमने इसे कुत्सित भावनाओं, घृणा, पाप की अग्नि में भस्मसात् कर दिया। अब रह गए चन्दन के थोड़े-से वृक्ष, थोड़े से वर्ष रह गए है इस जीवन के, शायद थोड़े से महीने। आओ इन्हीं का ठीक ठाक उपयोग करें। यत्न करो तुम्हारा लोक और परलोक दोनों सुधर जाए। लोक और परलोक सुधारने के दो साधन है-यज्ञ और गायत्री। गायत्री मन्त्र हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इसमें हमारी संस्कृति, सारी सभ्यता, समस्त सम्पत्ति, समस्त कर्म निहित हैं। इसमें ईश्वर की प्रस्तुति है, उपासना है, प्रार्थना है। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने इसे गुरुमन्त्र का नाम दिया है।

--अब आगे

सबसे पहले इसमें 'ओ३म्' है। 'भूः' 'भुवः' स्वः। 'ओ३म्' स्वयं एक मन्त्र है, संसार का सबसे बड़ा मन्त्र, गायत्री मन्त्र से भी बड़ा। ब्रह्मा ने 'ओ३म्' की व्याख्या करते हुए कहा- 'ओ३म' के 'अ' 'उ' और 'म्' तीन अक्षर 'ऋग्वेद', 'यजुर्वेद', और सामवेद के प्रतीक हैं। इसमें तीनों का सार है। ये तीनों अक्षर 'भूः भुवः स्वः' के प्रतीक हैं। 'भूः भुवः स्वः' का अर्थ आपको अभी बताऊँगा। ओ३म् के विषय में इतना ही मैं जानता हूँ कि सब-कुछ इसमें है, इसकी महिमा का अन्त नहीं।

गायत्री मन्त्र के प्रारंभ में इसको बोलते हैं। तब कहते हैं- 'भूर्भुवः स्वः'। इन तीनों शब्दों के विषय में उपनिषद् ने कहा- 'यह सब शास्त्रों का और मन्त्रों का सार है जो प्रजापति ने निकालकर समाने रख दिया है।

'भूः' का अभिप्राय प्राणों को देनेवाला, प्राणाधार है। प्राण के बिना कोई भी वस्तु इस संसार में रह नहीं सकती। वर्तमान विज्ञान को भी अन्त में मानना पड़ा कि यह संसार प्राणों से भरपूर है। प्राणों के बिना कोई भी वस्तु यहाँ अपना अस्तित्व नहीं रखती। किन्तु हमारे ईश्वर ने पहले ही कहा- 'भूः' प्राणों को देनेवाला, प्राणों का आधार। ये 'भूः', भुवः, स्वः, तीनों शब्द भगवान की प्रशंसा के सूचक हैं। ये प्रकट करते हैं कि ईश्वर क्या है?

भाटों और मीरासियों की तरह ईश्वर को उसके गुण बताते चले जाना तो कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता। ईश्वर को प्रशंसा की आवश्यकता नहीं। वह हमारी चाटुकारिता का भूखा नहीं। हम यदि भगवान् की प्रशंसा करते हैं, स्तुति करते हैं तो इसलिए कि इन शब्दों में जो गुण वर्णन किए गए हैं उनका कुछ भाग हमारे अन्दर भी धारण करने का यत्न करें। हम ईश्वर को कहते हैं प्राण-आधार- प्राणों को देनेवाला। इससे लाभ तभी होगा जबकि हम स्वयं भी किसी के प्राण-आधार बनें। किसी को प्राण यदि दे नहीं सकते, तो उसके प्राण ले भी नहीं सकते।

क्यों जी! हम जो ईश्वर को प्राण ाधार कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं, तब स्वयं हम प्राणियों के प्राण लेते फिरें तो इस प्रशंसा का लाभ क्या है? गायत्री के जाप का अर्थ यह नहीं कि हम ईश्वर को प्राणाधार मानकर बैठ जाएँ, अपितु यह भी है कि हम स्वयं किसी के प्राण न हरें। दूसरा शब्द है 'भुवः'- इसका अर्थ है दुःखों का नाश करनेवाला।

दुःख बहुत गम्भीर शब्द है। इसका ध्यान आते ही हृदय काँप उठता है। हम चाहते हैं दुःख हमारे पास न आए। किन्तु दुःख क्या है? आज मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दुःख कोई वस्तु नहीं है? हमने स्वयं इसको बना लिया है। दुःख चार प्रकार के होते हैं। एक वे जिन्हें हम स्वयं पैदा करते हैं, अपने कर्म से जन्म देते हैं। दूसरे वे जो असम्भव इच्छाओं के पूरा न होने से होते हैं। तीसरे वे जो हमारे अभिमान के कारण, देश की स्थिति के कारण, और प्रकृति के कारण से उत्पन्न होते हैं। महँगाई, बेकारी, वर्षा का न होना, दंगा हो जाना, संग्राम छिड़ जाना, अकाल का प्रकोप होना, इस प्रकार के दुःख समाज, देश और प्रकृति के दुःख हैं। इसमें हमारा कोई दोष नहीं। किन्तु शेष तीनों दुःख हमारे कारण से हमें भोगने पड़ते हैं। हम स्वयं इन्हें उत्पन्न करते हैं; अर्थात् दुःख जो हमें संसार में मिलते हैं उनका पचहत्तर प्रतिशत भाग हम स्वयं अपने लिए उत्पन्न करते हैं।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

शिवरात्रि को ऋषि दयानन्द को हुए बोध से देश व विश्व का अपूर्व कल्याण हुआ

● – मनमोहन कुमार आर्य

वेदों के अपूर्व ऋषि और आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती को मंगलवार 12 फरवरी, सन् 1839 को शिवरात्रि के दिन बोध हुआ था। क्या बोध हुआ था, यह कि उनके पिता व परिवार जन जिस शिव मूर्ति के रूप में शिवलिंग की पूजा करते थे वह सच्चे व यथार्थ ईश्वर नहीं हैं। शिव पुराण ग्रन्थ में वर्णित भगवान शिव की जिस कथा को शिवरात्रि के दिन व्रत करते हुए सुना व सुनाया जाता है, वह कथा भी मन्दिर वाले शिवलिंग पर यथार्थ रूप में घटित नहीं होती। शिवरात्रि के दिन हम जिस कथा का वाचन करते हैं व सुनते हैं वह कथा कुछ ऐतिहासिक और कुछ पारमार्थिक होती है। कथा में भगवान शिव के जिन गुणों का वर्णन किया जाता है वे शिवमूर्ति वा शिवलिंग में किंचित् भी नहीं पाए जाते। यदि यह कथा व शिवलिंग की मूर्ति सत्य होते तो फिर शिवरात्रि के दिन 14 वर्षीय बालक मूल शंकर को मन्दिर के चूहों को शिव–अनासक्ति न हुई होती। उन्होंने देखा कि देर रात्रि के समय मन्दिर में विद्यमान बिलों से चूहे निकलते हैं ओर शिवलिंग के चारों ओर दौड़ रहे हैं। शिवभक्तों व व्रतियों ने वहाँ जो मिष्ठान्नरूपी नैवेद्य चढ़ाए थे, उसका स्वतन्त्रतापूर्वक भक्षण कर रहे हैं। जीवित मनुष्य के शरीर पर यदि मक्खी भी बैठ जाए तो वह उसे उड़ा देता है मच्छर बैठे तो उसे हटाता व मार देता है। मक्खी व मच्छर भी तुच्छ जीव होकर मनुष्य से डरते हैं परन्तु चूहे शिवजी से पूरी तरह से निर्भय होकर उसके शरीर पर उछल कूद किए ही जा रह थे। शिवमूर्ति का यह जड़वत् व्यवहार देखकर बालक मूलशंकर को यह निश्चय हो गया कि उनके सम्मुख जो शिवमूर्ति है वह शक्ति, बुद्धि व ज्ञान से सर्वथा रहित है। उन्होंने उसी दिन अपने पिता से जो कथा सुनी थी उसके अनुसार शिव कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं जो सर्वशक्तिमान हैं और विश्व के बड़े से बड़े बलशाली व्यक्ति को संकल्प व संकेत मात्र से धराशायी कर सकते थे। शिवलिंग की मूर्ति में वह शक्ति दृष्टिगोचर वा विद्यमान न होने अथवा चूहों को अपने शिर आदि अंगों से दूर न रख पाने के कारण बालक मूल शंकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह असली शिव नहीं है, अतः उन्होंने न केवल अपने व्रत का ही त्याग कर दिया था अपितु भविष्य में शिवलिंग वा शिवमूर्ति की पूजा–अर्चना न करने का संकल्प भी कर लिया था। यही ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि के उस दिन बोध हुआ था। इसके बाद वह सच्चे शिव की खोज में जुट गए जिसे उन्होंने भारी तप व पुरुषार्थ करके प्राप्त कर ही लिया। यही ऋषि के बोध का फल था जिससे न केवल भारत अपितु सारा विश्व लाभान्वित हुआ। यह बात और है सारा संसार अविद्या से ग्रस्त है। संसार के लोगों ने अपनी अविद्या व किन्हीं स्वार्थों के कारण ऋषि दयानन्द के द्वारा अन्वेषित सच्चे शिव के सत्य स्वरूप विषयक ज्ञान की उपेक्षा की और आज भी संसार अविद्या से ग्रस्त होकर मत–मतान्तरों के अन्धविश्वासों को मानने में ही अग्रसर है।

ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि के दिन जो बोध हुआ उसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें संसार के प्रति वैराग्य हो गया और वह सच्चे ईश्वर को जानने के लिए एक अपूर्व सच्चे जिज्ञासु बन गए। शिवरात्रि पर बोध होने के समय उनकी आयु मात्र 14 वर्ष थी, इसलिए उन्होंने स्वयं को अध्ययन में व्यस्त किया और यजुर्वेद को स्मरण करने के साथ अनेक ध्याकरण व शास्त्रीय ग्रन्थ पढ़ते रहे। यदा–कदा वह अपने गुरुजन और मित्रों से भी ईश्वर के विषय में शंकाएँ करते रहते थे। ऋषि दयानन्द के वैराग्य विषयक विचार माता–पिता से छिप नहीं सके, अतः उनके द्वारा उनके विवाह की तैयारी की गई। जब बाल मूलशंकर को लगा कि वह विवाह से बच नहीं सकते तो गृहस्थ में न फँसने का निश्चय कर 18 वर्ष की आयु में उन्होंने पितृगृह का त्याग कर दिया। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रथम उन्होंने देश भर के धार्मिक स्थानों में जाकर योगियों व धर्म गुरुओं से सम्पर्क कर उनसे ईश्वर व धर्म विषयक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया। एक सच्चा व सिद्ध योगी बनने और सद्ज्ञान की प्राप्त करने के लिए उन्होंने उत्तराखण्ड के अनेक पर्वत व वनों में स्थित धार्मिक स्थानों पर जाकर योगियों की खोज की। वहाँ उन्हें यदि कोई विद्वान मिला तो उससे वार्तालाप कर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न किया। इसी क्रम में उन्हें अपने एक योग गुरु से मथुरा के संस्कृत व्याकरण के आचार्य व व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का पता मिला। सन् 1860 में स्वामी दयानन्द ने मथुरा में गुरुचरणों में पहुँच कर उनसे विद्यादान देने की प्रार्थना की। इसके बाद लगभग तीन वर्ष उनके सान्निध्य में रहकर अष्टाध्यायी–महाभाष्य एवं निरुक्त आदि व्याकरण ग्रन्थों सहित अनेक ग्रन्थों व शास्त्रों का अध्ययन करते हुए उन पर अधिकार कर लिया। उन्होंने अपनी योग्यता को इतना बढ़ाया कि वह धाराप्रवाह सरल संस्कृत में भाषण करने में समर्थ होने के साथ किसी भी शास्त्रीय विषय पर प्रभावशाली उपदेश कर सकते थे। सन् 1863 में गुरु विरजानन्द सरस्वती जी से दीक्षा लेकर उनके परामर्श के अनुसार उन्होंने संसार से अविद्या दूर करने का निश्चय किया और इस कार्य को सफल करने में प्राणपण से समर्पित हो गए।

14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन जिस बोध व ज्ञान का प्रकाश स्वामी दयानन्द जी की आत्मा में हुआ था वह कालान्तर में पल्लवित, पुष्पित व विकसित होकर विस्तार के शिखर पर पहुँचा जहाँ उन्हें संसार विषयक सभी प्रकार के सद्ज्ञान की प्राप्ति हुई। मनुष्य को जीवन में जितनी भी शंकाएँ हो सकती हैं, उन सबका समाधान ऋषि दयानन्द को प्राप्त हुआ। वह न केवल समस्त शास्त्रों के ज्ञान से आलोकित हुए अपितु ईश्वरीय ज्ञान वेदों को भी सम्पूर्णता के साथ उन्होंने आत्मसात किया और उसका प्रकाश दिग्दिगन्त व विश्वभर में फैलाया। उन्होंने घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण संसार के सभी मानवरचित ग्रन्थ तुच्छ व एकांगी हैं। कोई भी मानव निर्मित ग्रन्थ वेदों से समानता नहीं रख सकता। सभी ग्रन्थों की वही मान्यताएँ स्वीकार व आचरणीय हो सकती हैं जो वेदानुकूल हों। वेदविरुद्ध मान्यताओं का प्रमाण नहीं होता। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जाना और समाधि अवस्था में उसका साक्षात् किया। हम विचार कर यह भी अनुमान करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द को ईश्वर का साक्षात्कार न होता तो वह वेद प्रचार का कार्य कदापि आरम्भ न करते। उन्होंने एक स्थान पर कहा भी है कि जीवन में उन्हें जो प्राप्त करना था वह प्राप्त हो चुका था। उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्जन इस लिए नहीं किया क्योंकि उनकी विद्या प्राप्ति की इच्छा तब अधूरी थी जो गुरु विरजानन्द जी के सान्निध्य में रहकर पूरी हुई। उन्होंने संसार का कल्याण करने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना सहित कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनके समय में न वेद उपलब्ध थे और न सत्य वेदार्थ। उन्होंने पुरुषार्थ कर वेद मन्त्र संहिताओं को प्राप्त करने सहित उनके सत्य वेदार्थ को जाना व उसका भाष्य कर सबके लाभार्थ प्रकाशन किया। उनका वेदप्रचार कार्य, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष आदि मिथ्या विश्वासों का खण्डन आदि संसार के सभी मनुष्यों के हित के लिए था। वह अहिंसा दुष्टाचार का दमन और सदाचार को सम्मानित करने वाली थी। उनका मानना था कि एक दुष्ट व्यक्ति को दण्डित करने से उसके द्वारा भविष्य में पीड़ित किए जाने वाले अनेकानेक व्यक्तियों को अन्याय व अत्याचार से बचाया जा सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, चाणक्य व सभी वैदिक ऋषियों के वह प्रशंसक थे। उन्होंने संसार से अविद्या व अज्ञान का नाश करने के लिए वेदों की शिक्षा व गुरुकुल प्रणाली को प्रवृत्त करने का सत्यार्थ प्रकाश में समर्थन किया। वह देश की आजादी के भी मन्त्रदाता व उद्घोषक थे। सत्यार्थप्रकाश एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में उनके स्वराज्य विषयक विचारों को देखा जा सकता है। मांसाहार व पशुहत्या के वह घोर विरोधी थे और ऐसा करना उनकी दृष्टि में अमानवीय होने से निन्दनीय था। गोरक्षा के समर्थन व गोहत्या के विरोध में उन्होंने पृथक से 'गोकरुणानिधि' नाम से एक प्रेरक पुस्तक लिखी है। हिन्दी की उन्नति के लिए भी उन्होंने सबसे अधिक सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किया। विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने बाल विवाह जैसी कुप्रथा का निषेध किया। समाज में विधवा विवाह का प्रचलन भी आर्यसमाज के अनुयायियों के द्वारा ही हुआ। स्वामी जी ने शिवरात्रि को हुए बोध व उसके बाद विद्या प्राप्ति के उनके प्रयत्नों में मिली सफलता के कारण अस्पृश्यता व छुआछूत

☞ पृष्ठ 07 का शेष

www.thearyasamaj.org

बोधोत्सव पर आत्मावलोकन करें

● महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस धरा पर जिस समय अवतरित हुए उस समय चारों ओर पाखण्ड और आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे, एक परमात्मा के स्थान पर पत्थरों और व्यक्तियों की पूजा हो रही थी। आर्यों के आलस्य और प्रमाद के कारण वेद का पढ़ना–पढ़ाना तथा सुनना–सुनाना लुप्त हो गया था। मातृशक्ति को पढ़ने–पढ़ाने का अधिकार नहीं था। छुआछूत का कोढ़ समाज को जर्जर कर रहा था। भारत माँ परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। हिन्दू लोग धड़ाधड विधर्मी बनकर राष्ट्र–भक्ति से विमुख हो रहे थे। मृतप्राय समाज एवं राष्ट्र को संजीवनी पिलाने वाला कोई नहीं था। इन समस्त बुराईयों से लड़कर इन्हें समूल नष्ट करने की कल्पना तक करने वाला भी कोई नहीं था। ऐसे विकट समय में महर्षि जी ने समूल सुधार का बीड़ा उठाकर अनुपम साहस का परिचय दिया। गुरू विरजानन्द जी को अपना समूचा जीवन समर्पित करने के बाद उन्होंने स्थान–स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किए अनेकों प्रवचन दिए तथा व्यक्तिगत रूप से भेंटें करके अनेक लोगों का पथ प्रदर्शन किया। यही नहीं उन्होंने सत्यार्थ–प्रकाश, संस्कार–विधि, आर्यभिविनय, गोकरुणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य–रत्नमाला, पञ्चमहायज्ञ विधि आदि अनेक अद्भुत ग्रन्थों की रचना की।

टंकारा की धरती को त्यागते समय उनके दो ही सपने थे– सच्चे शिव को प्राप्त करना तथा मृत्युंजयी बनना। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने घोर तपस्या करके योग की अनेकों सिद्धियाँ प्राप्त की मगर वे इतने लोकैषणा रहित थे कि अपनी यौगिक सिद्धियों का कहीं पर भी किसी प्रकार का प्रदर्शन आदि नहीं किया। वे आदित्य ब्रह्मचारी थे। उनके ब्रह्मचर्य बल का लोगों ने कई बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। संसार में और भी अनेकों ब्रह्मचारी हुए मगर हनुमान जी ने श्रीराम की सेवा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए, भीष्म ने अपने पिता की तुच्छ कामना को पूरा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया मगर महर्षि जी ने अपने गुरू की आज्ञा को मानकर संसार के उपकार के लिए यह व्रत धारण करके आर्ष ग्रन्थों के प्रचार–प्रसार तथा समाज और राष्ट्र–सेवा के लिए अपना समूचा जीवन आहुत कर दिया। उन्हें जीवन में एक क्षण के लिए भी कामवासना उद्वेलित नहीं कर पाई वे सत्यवादी थे। उनके जीवन में कितनी ही बार कितने ही प्रलोभन आए मगर वे कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बने। प्रभु भक्त होने के कारण उनमें अद्भुत सहनशक्ति और निर्भीकता थी, वे दयालुता तथा परोपकार की साक्षात्मूर्ति थे। मानव तो मानव उनसे किसी पशु का दर्द, भी नहीं देखा जाता था। जीवन पर अपने साथ उपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। यहाँ तक कि अन्त में जिस जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने जहर दिया, संसार से प्रयाण करने से पूर्व उसे भी अपने पास से धन देकर नेपाल की ओर भाग जाने की प्रेरणा दी ताकि वह पकड़ा न जा सके। वे सच्चे समाज सुधारक थे। उन्हीं की प्रेरणा से महिलाओं के लिए विद्या ग्रहण करने के दरवाजे खुले। वे ही अछूतों को उनके अधिकार व सम्मान दिलाने वाले थे। उन्होंने सतीप्रथा तथा बालविवाह और बलि–प्रथा आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पाखण्ड और आडम्बरों को जड़ से उखाड़ने के लिए उन्होंने स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को आचरण के साथ जोड़ने की बात कही अन्यथा धर्म मात्र बाहरी पहनावे और चिह्न आदि धारण करने तक ही सीमित हो गया था। उन्होंने जिस सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों पंडित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गुरूदत्त आदि अन्य अनेकों मनीषियों नेअपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। महर्षि जी ने प्राचीनतम शिक्षा पद्धति के जो सूत्र प्रस्तुत किए थे उन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज आदि ने सहर्ष अपने आपको समर्पित कर दिया। आर्य समाज का ऐसा स्वर्णयुग आया कि इस संस्था ने चारों ओर अपने कार्यों की धूम मचा दी तथा आर्यसमाज व आर्यों के नाम एक आदर्श के रूप के लिए जाने लगे।

उन्होंने लोगों को पुनः परमात्मा के ज्ञान अर्थात् वेदों की ओर लौटने का न केवल आह्वान किया बल्कि अपने प्रबल तर्कों और प्रमाणों के आधार पर वेदों को परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी सिद्ध किया। वेद के नाम पर जो कुछ भी अनर्गल व अप्रासंगिक हो रहा था, अपने वेद–भाष्य के द्वारा उन सब आक्षेपों का निराकरण कर दिया। निरुक्त के आधार पर वेदों का पारमार्थिक और व्यावहारिक पक्ष रखकर वेद के सम्बन्ध में प्रचलित समस्त भ्रान्तियों को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। यह सिद्ध करके बता दिया कि वेद में बहुदेवता वाद, लौकिक इतिहास तथा अप्रासांगिक एवं अनित्य विनियोग वाद नहीं है। अज्ञानी लोगों को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इसलिए उनका अर्थ परमात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव के विपरीत नहीं किया जाना चाहिए, वह सृष्टि–नियम के विरूद्ध नहीं होना चाहिए, वह मानव उन्नति में सहयोगी होना चाहिए, वह अनुकूल, तर्कानुमोदित, बुद्धिसंगत होना चाहिए। उन्होंने वेदों को समझने की जो आँख दी उससे वेद निन्दक भी वेदों को गडरियों के गीत कहना छोड़कर प्राचीनतम ग्रन्थ, समस्त ज्ञान–विज्ञान का पुस्तक तथा ईश्वरीय ज्ञान कहने को विवश हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष जी ने कहा– 'वेदों के रहस्यों को खोलने की सही कुंजी यदि किसी के पास थी तो वह केवल दयानन्द के पास थी... वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं.... दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया है....'

महर्षि जी में राष्ट्रभक्ति कूट–कूट कर भरी हुई थी। अठारह सौ सत्तावन में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी इस बात के आज कितने ही प्रमाण मिल रहे हैं। कुछ कारणों से वह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी मगर वे उससे निरुत्साहित नहीं हुए बल्कि उन कारणों को खोजा जिनके कारण वह असफलता मिली थी और उन कारणों को दूर करने के लिए कृत–संकल्प हो गए। वे निर्भीक शब्दों में स्वतन्त्रता की माँग करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम अपने ग्रन्थ सत्यार्थ–प्रकाश में स्वराज्य की बात कही, अनेक ग्रन्थों में विदेशी राज्य के समूल नाश की कामनाएँ की तथा अंग्रेज अधिकारियों के मुँह पर ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं तो परमात्मा से रात–दिन यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरे राष्ट्र को विदेशी राज्य से शीघ्र मुक्ति मिले। सभी समाजसुधारकों तथा अग्रणी नेताओं ने इस बात को स्वीकारा है कि स्वतंत्रता के प्रथम प्रणेता तथा राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी ही थे। यह बात अक्षरशः सत्य है कि यदि उन्होंने अपने देशवासियों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा न दी होती तथा आर्यसमाज की स्थापना नहीं कि होती तो भारत पन्द्रह अगस्त 1947 को स्वतंत्र न हो पाता। आर्यसमाज एक ऐसी क्रान्ति बन कर उभरा कि आर्यसमाजी होने का अर्थ ही होता था– क्रान्तिकारी। बाल गंगाधर तिलक जी के शब्द हैं कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह प्रेरणा उन्हें सत्यार्थ–प्रकाश से मिली। जिन लाला लाजपत राय ने स्वतंत्रता के लिए अपने आप को आहुत कर दिया उनके शब्द हैं – आर्यसमाज मेरी धर्म माता और महर्षि दयानन्द मेरे धर्म पिता है।' उनकी शहादत पर जिन क्रान्तिकारियों ने इस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा उस जालिम को मौत के घाट उतारा, जिसने लाला जी पर लाठियाँ बरसाई थी, उनमें भगत सिंह प्रमुख थे। भगत सिंह जी का पूरा परिवार सरदार अर्जुन सिंह, किशनसिंह, अजीतसिंह आदि महर्षि जी की राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही क्रान्तिकारी बने थे। अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि सत्यार्थ–प्रकाश ने ही उन्हें क्रान्तिकारी बनाया। चन्द्रशेखर आजाद आपके ग्रन्थ आर्याभिविनय का जब तक पाठ नहीं कर लेते थे वह प्रातराश नहीं करते थे। यही नहीं बल्कि उन्हीं के परम शिष्य

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 04 का शेष

बोधोत्सव पर आत्मावलोकन ...

पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर 'भारत भवन' की स्थापना की थी जहाँ वीर सावरकर, मदनलाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि इनके शिष्य बने तथा विदेश में भी क्रान्तिकारियों का प्रेरणा–स्रोत भी आर्यसमाज ही था।

उन्होंने स्वयं बोध प्राप्त करके संसार को परमात्म–बोध, आत्म–बोध, मानव बोध, समाज–बोध, वेद–बोध, कर्म–बोध, धर्म–बोध, शिक्षा –बोध, साहित्य–बोध, भाषा–बोध तथा राष्ट्र–बोध दिया। श्री अरविन्द जी ने इसीलिए पहाड़ों की चोटियों से तुलना करते हुए महर्षि जी को सर्वोच्च शिखर की उपमा दी है। वास्तविकता यह है कि उनकी किसी से तुलना ही नही की जा सकती है। क्यों कि वे अतुलनीय हैं... महर्षि जी ने अपनी विद्वता या योग का प्रदर्शन नहीं किया, न ही किसी नए मत या सम्प्रदाय की स्थापना की, न कोई नया गुरूमंत्र ही दिया और न ही किसी नई पूजा पद्धति का विधान किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरी कोई भी नया मत या सम्प्रदाय स्थापित करने की काई इच्छा नहीं है और न ही मैनें अपनी ओर से कोई बात कही है बल्कि ब्रह्म से लेकर जैमिनी मुनि तक ऋषि–मुनियों ने वेदानुसार जिन मान्यताओं को माना है उसी को लोगों के सामने रखा है क्योंकि अपने आलस्य, प्रमाद तथा एषणाओं के कारण लोग उन मान्यताओं को भूल चुके थे। हालाँकि उनकी इच्छा किसी नई संस्था की स्थापना करने की भी नहीं थी मगर लोगों के आग्रह पर 'आर्यसमाज' की स्थापना की और संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना तथा इस उन्नति का आधार वेदों को ही माना। उन्होंने आर्यसमाज के जो दस नियम बनाए वे संसार के इतिहास में अद्वितीय ही नहीं बल्कि अनुपम भी हैं। उन नियमों के रहते कोई भी इस संस्था पर उँगली नहीं उठा सकता है। उप–नियमों के रूप में संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे सूत्र दिए जिनका अक्षरशः अनुपालन करने से आर्यसमाज कभी भी अधोगति को प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि जब तक चरित्र को प्रमुखता दी गई तथा नियमों और उपनियमों का भली प्रकार से कार्यान्वयन होता रहा, आर्यसमाज ने अभ्युदय के व्योम को छू लिया मगर आज स्थिति कुछ विपरीत है।

हालाँकि आज भी बहुत से आर्यसमाजी ऐसे हैं जो पूर्णरूप से महर्षि जी के मन्तव्यों को साकारता देने में लगे हुए हैं मगर इस सत्य को भी स्वीकारना होगा कि आज अधिकतम समाजों में महर्षि जी के नियमों–उपनियमों का अनुपालन नहीं हो रहा है। इस समाज का सदस्य बनने के लिए जो नियम बनाए गए थे, उन्हें आज कोई मानने वाला नहीं रहा, उपस्थिति रजिस्टर का प्रयोग या तो किया ही नहीं जाता और यदि किया जाता है तो केवल अपने गुट को शक्तिशाली बनाने के लिए, शतांश देने की बात कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं। आश्चर्य तो यह है कि ऐसे आचारहीन तथा नियम–उपनियमों का उलंघन करने वाले लोग ही अपने आप को सच्चे आर्य कहने लगे हैं तथा जो महर्षि जी के सदाचार एवं नियम–उपनियमों की बात करता है उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। उस विशुद्ध आर्य को परे हटाने के लिए ये तथाकथित आर्य संगठित हो जाते हैं। इस का दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत सी सभाओं, आर्यसमाजों तथा उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं तथा सम्पत्तियों पर गैर आर्यों का आधिपत्य हो गया है....वोट की राजनीति के अन्तर्गत या 'सबको जोड़कर चलो' के नाम पर बड़े–बड़े अनुशासनहीनों, असत्यवादियों तथा घपला करने वालों का पक्ष लेने वाले तो बहुमत में मिल जाएँगे मगर सत्य और सदाचारी का साथ देने वाला कोई विरला ही बचा है। इससे सच्चे आर्य अन्ततः उपराम होते जा रहे हैं क्योंकि आचारहीन, आध्यात्मिक शून्य, मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति तथा आर्यसमाजों के मन्तव्यों से पूर्णतया अनभिज्ञ व्यक्तियों द्वारा कब तक अपमानित हुआ जा सकता है....उनके उपराम होने से स्वार्थी तथा पदलोलुप व्यक्ति प्रसन्न ही होते हैं शर्मिन्दा नहीं। इस प्रक्रिया के चलते बहुत सी सभाओं या आर्य समाजों पर दुराचारी, असत्यवादी तथा अपनी–अपनी एषणाओं को परितृप्त करने वाले अनार्यों का आधिपत्य होता जा रहा है........ जिसके कारण महर्षि जी द्वारा चलाई गई प्रचार–प्रसार की प्रक्रियाएँ शिथिल तथा दिशाहीन हुई हैं.... भले ही दिख रहा हो कि हम बढ़ रहे हैं या हम कार्य कर रहे हैं मगर ऐसे लोग संभवतः नींव से हटकर बनाए गए भवन का हश्र नहीं जानते हैं या अपने–अपने स्वार्थों की पट्टी बाँधने के कारण जानना नहीं चाहते हैं। ऐसे स्वार्थी लोगों का तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है गर महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करने के कारण आर्यसमाज की गरिमा पर ठेस पहुँची है तथा अन्ततः हम ऐसे पतन के मार्ग पर चल पड़े हैं जिसका अन्त केवल और केवल विनाश है......

यह लघु लेख न तो किसी व्यक्ति विशेष, न किसी विशेष सभा या आर्यसमाज पर कटाक्ष है बल्कि विन्म्र निवेदन है कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी आत्मान्वेषण तथा आत्मावलोकन करें कि महर्षि जी की क्या भावना थी और आज हम कहाँ आकर पहुँचे हैं। जहाँ तक महर्षि दयानन्द जी तथा आर्यसमाज की उत्कृष्ट एवं सार्वभौमिक विचारधारा का प्रश्न है, आज यह विचारधारा अधिक प्रासंगिक है मगर आज हम कहाँ खड़े हैं.... आर्यसमाज में कराए गए विवाह को न्यायालय में भी प्रमाण माना जाता था मगर आज उस पर भी क्यों उँगलियाँ उठने लगी हैं.. क्यों? अपनी अकर्मण्यता, सिद्धान्तहीनता तथा आपसी तालमेल और सौहार्द के अभाव के कारण ही आज समाज व देश के लिए आदर्श बनना तो दूर रहा, हमारे पूर्व मनीषियों ने समाज व देश के लिए जो कुर्बानियाँ की हैं, देश व समाज के लिए जो सर्वाधिक काम किया है, राजनेताओं तथा भावी पीढ़ी में उसे दर्ज कराने तक में हम अक्षम हो गए हैं.... क्या इस पर चिन्तन करना अनिवार्य नहीं है? हमारा यह मानना है कि यदि महर्षि दयानन्द जी के आदेशों का अक्षरशः पालन किया जाए, गैर आर्य समाजियों की भीड़ बढ़ाने के स्थान पर सत्यवादी, सच्चरित्र एवं सिद्धान्तवादी लोगों को प्रश्रय दिया जाए, नियम–उपनियमों का दृढ़ता के साथ अनुपालन किया जाए तो आज भी हम अपने उस पुरातन गौरव को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा अन्य और कोई मार्ग नहीं है। कथनी और करनी जब तक एक नहीं होगी तब तक औरों की बात तो दूर रही ऐसे लोग अपने परिवार तक को भी आर्यसमाजी नहीं बना पाते हैं मगर इसके विपरीत यदि स्वंय मन, वचन और कर्म से सिद्धान्तवादी बनेंगे तो इससे ही अपने परिवार और समाज के अन्य लोग भी आर्य समाज की ओर आकर्षित होंगे। इसी से हमारा संगठन शक्तिशाली बनेगा तथा हम सही अर्थों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। सभाओं तथा आर्यसमाजों में भ्रष्ट, सिद्धान्तहीन, स्वेच्छाचारी, अनुशासनहीन, असत्यवादी, नैतिकताहीन तथा गैर आर्यसमाजियों को सभासद बनाना या अधिकार देना कभी भी श्रेयस्कर नहीं हो सकता है। यहाँ हम यह बात भी कहना चाहते हैं कि आज भी संसार में आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था और कोई नहीं है और न ही आर्यसमाज में सिद्धान्तवादियों का अकाल है। आज भी महर्षि दयानन्द जी के बहुत से दीवाने समर्पित होकर अपने–अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं.... वे किसी एषणा के कारण नहीं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने के लिए तथा प्राणिमात्र के कल्याण की भावना और अपने जीवन को सार्थकता देने के लिए रात–दिन चुपचाप कार्यरत हैं....उनके मानस पटल से महर्षि जी का महान व्यक्तित्व तथा उनके सिद्धान्त एक पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं होते हैं तभी तो आज भी महर्षि जी का महान व्यक्तित्व तथा उनके सिद्धान्त एक पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं होते हैं। तभी तो आज भी महर्षि जी द्वारा रखी गई नींव पर विशाल भवन बनाने के सपने को साकार करने में अनवरत लगे हैं। ऐसे लोगों को संरक्षण और सवंर्धन देना ही समय की माँग है। अन्यथा महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करके चलना व्यक्ति, आर्यसमाज, समूचे समाज तथा राष्ट्र और विश्व के लिए आत्मघाती कदम होगा। महर्षि के बोधोत्सव पर प्रत्येक ऋषिभक्त को ऐसी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम महर्षि के मन्तव्यों से जरा सा भी इधर–उधर नहीं होंगे, यदि होते हैं तो इससे बड़ा पाखण्ड तथा कृतघ्नता और कोई नहीं हो सकती है....

महादेव, तह. सुन्दर नगर
जिला–मण्डी (हि.प्र.)

ऋषि बोध से बोध

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

महा शिवरात्रि के पवित्र पावन अवसर पर समस्त आर्य जन ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इसी दिवस बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि की उस रात को जब अन्य सभी सो रहे थे तभी सही अर्थों में जागते बालक मूलशंकर ने चूहों को शिवलिंग पर उत्पात करते, प्रसाद खाकर मल मूत्र विसर्जन करते देखा तो उस शुभरात्रि पर बालक मूलशंकर के मन में तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई कि यह शिवलिंग जो स्वयं अपनी रक्षा उत्पात कर रहे चूहों से नहीं कर पा रहा, वह सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता, न्यायकर्ता, संहारक शिव कैसे हो सकता है? बस बालक के मन में उठी इस तीव्र उत्कंठा ने मूलशंकर के स्वामी दयानन्द बनने की यात्रा का शुभारंभ कर दिया और और उसने ईश्वर के सत्यस्वरूप को वेदों की सही व्याख्या करते हुए रखा। देव दयानन्द द्वारा दिए गए ईश्वर के सत्यस्वरूप, वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धांतों और नियमों को हम आर्य जन मानते हैं, अर्थात् ऋषि बोध से हम सभी को बोध लेना चाहिए।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हम सही मायनों में ऋषि बोध से बोध लेकर अब सर्वथा सरल रूप में सुलभ आर्य मान्यताओं को सीख समझकर अपने जीवन में उतार कर एक सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन पाए। क्या हम देव दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रथम सोपान कृण्वन्तो स्वयमार्यम् को भी पूरा कर सके? क्या हम सही अर्थों में ऋषि बोधोत्सव को मना रहे हैं या फिर बोधोत्सव मनाने के अधिकारी है? अब इन प्रश्नों पर विस्तार से विचार करते हैं।

देव दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप को हम सभी के लिए दिया था और जड़पूजा को आर्यावर्त के लिए घातक और लम्बी गुलामी का कारण बताया। परन्तु हम विचार करें क्या आज भी चेतन मानव जड़ के आगे माथा नहीं पीट रहा। क्या आज भी हमारी माताएँ, बहनें, बेटियाँ तथाकथित मुस्लिम कब्रों, पीरों पर अज्ञानतावश सिर नहीं पटक रही? यदि यह स्थिति आज भी व्यापक है तो क्या हमने ऋषि बोध से कुछ बोध लिया!

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना बताया था। क्या आज हम आर्य समाज के सेवा कार्यों को इतना व्यापक कर पाए है कि लोग हमारा अनुसरण करने लगें? क्या आर्य समाजों में संसार का उपकार करने वाले सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है? क्या हम दूसरों के दुःख से दुःखी होकर उनकी सहायता करने के लिए तत्पर होते हैं? यदि नहीं तो क्या हम कह सकते है कि हमने अपने ऋषि के बोध से कुछ बोध लिया।

आर्य समाज की स्थापना पाखंड खंडन, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, विषमताओं के विरुद्ध एक जन आन्दोलन के रूप में की गई थी। क्या आर्य समाज पाखंड खंडन और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन कर पाया। क्या आज भी समाज में डायन, भूत प्रेत, बाधा चमत्कार, नामदान जैसी बुराइयाँ हमारा शोषण नहीं कर रहीं? क्या आज भी तथाकथित कथावाचक हमारी अबोधता और धर्मभीरुता का लाभ उठाकर ईश्वर के स्वयंभू ठेकेदार या स्वयं को ईश्वर घोषित करके हमारा शोषण नहीं कर रहे? यदि ऐसा है तो क्या हम सही मायनों में बोधोत्सव मनाने के अधिकारी है।

देव दयानन्द ने जितना उपकार इस पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण सोच पर तीखा प्रहार करते हुए नारी जाति के उत्थान के लिए किया उसके लिए नारी जाति को सदैव उनका ऋणी बना दिया। देव दयानन्द ने बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, नारी उत्पीड़न पर चोट करते हुए नारी शिक्षा का द्वार खोला। परन्तु क्या आज भी नारी पर अत्याचार बंद हो गया? क्या आज भी निर्भया जैसे सामूहिक रेप कांड या फिर हॉनर किलिंग जैसी बुराईयां विद्यमान नहीं है? क्या आज भी कोमल संवेदनशील ममतामयी माँ को उसके ही गर्भ में जन्म ले रहे उसके प्रतिरूप एक कन्याभ्रूण को उसके सर्वाधिक सुरक्षित स्थान पर मार देने के लिए विवश नहीं किया जाता। यदि ऐसा हो रहा है तो आर्य समाज और शेष समस्त देश ने देव दयानन्द के बताए आदर्शों पर चलकर बोध कब लिया?

देव दयानन्द ने आर्ष शिक्षा पद्धति पर बल दिया। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए जहाँ महामानव स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनः स्थापना गुरुकुल खोलते हुए की वहाँ त्यागमूर्ति श्वेतवस्त्रों में सन्यासी महात्मा हंसराज ने एक आन्दोलन के रूप में प्राचीन और नवीन को जोड़कर डी.ए.वी. आन्दोलन प्रारंभ किया। परन्तु हमने देश की आजादी के उपरान्त गुलामी की मानसिकता वाली मैकाले की उस शिक्षा प्रणाली को अपना लिया जो हमारे देश के भावी नागरिकों को आज भी मानसिक दासता के बंधन में जकड़ रही है। आज भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में आर्य संस्कार देकर बच्चों को एक अच्छा मनुष्य सच्चा आर्य बनाने का सर्वथा अभाव है। ऐसे में क्या हम कह सकते हैं कि हम बोधोत्सव मनाने के सच्चे अधिकारी हैं या फिर हमने ऋषि बोध से कोई बोध लिया?

एक सामान्य वाहन चालक भी अपने आगे चल रहे वाहन को देखकर किसी गड्ढे से बचने के लिए सही दिशा का चयन करके मार्ग परिवर्तन कर लेता है। परन्तु न जाने क्यों हम आज भी मानसिक दासता के बंधन में बंधे तथाकथित विकास के नाम पर पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए अपने साफ दिखाई दे रहे विनाश की ओर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। हमें गति के रोमांच में अपना विनाश और इतिहास की तलहटी में पड़ी सभ्यताओं के नरकंकाल दिखाई नहीं दे रहे जो अट्टाहस कर रहे हैं आओ तुम भी इतिहास की खाइयों में समा जाओ। यदि सही मायनों में ऋषि बोधोत्सव मनाना है तो आर्य सिद्धांतों मान्यताओं को जान मान कर स्वयं आर्य बनते हुए सबको आर्य बनाना पड़ेगा।

602 जी एच 53
सैक्टर 20 पंचकूला
मो. 09467608686, 09878748899

योग, धन, पुरन्धी व वाजों को प्राप्त कराते हैं

● डॉ. अशोक आर्य

परमपिता परमात्मा हमें योग व धन प्राप्त कराते हैं। पुरन्धि की प्राप्ति भी हमारे वह पिता ही कराते हैं तथा वाजों को दिलाने वाले भी वह पिता ही हैं। इस तथ्य का प्रकाश यह मन्त्र इस प्रकार करता है:–

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्याम्।
गमद वाजेभिरा स नः ।। ऋग्वेद 1.5.3।।

वह पिता वरणीय वस्तुओं के ईशान हैं, यह ज्ञान हमें इस सूक्त के दूसरे मन्त्र से मिलता है। इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए यह मन्त्र तीन प्रकार के उपदेश करते हुए कह रहा है कि:–

1. प्रभु की कृपा के अधिकारी बनें

जो पिता हमारे सब के लिए सदा स्मरणीय है, जिनके पास जा कर हम मित्र के समान व्यवहार करते हुए, उससे बहुत सा धन आदि पाने का यत्न करते हैं। हमारे वह प्रभु निश्चय ही हमें जो अप्राप्त वस्तुएँ हैं, जिन वस्तुओं को हम अब तक प्राप्त नहीं कर पाए हैं तथा जिन्हें हम पाने की अभिलाषा करते हैं, जिन्हें पाने की हम इच्छा करते हैं, हमारे वह प्रभु इन वस्तुओं का योग करने वाले हैं। हम जिन वस्तुओं को पाने की कामना करते हैं किन्तु अब तक पा नहीं सके हैं, उन वस्तुओं को प्राप्त कराने वाले, योग कराने वाले, जोड़ने वाले हमारे यह प्रभु ही तो हैं। वह यह प्राप्तियाँ कराने वाले हमारे कार्य साधक हैं।

यह सब सिद्धियाँ, यह सब उपलब्धियाँ, यह सब जोड़, यह सब योग, हम कैसे प्राप्त करते हैं? यह मन्त्र इस का उत्तर देते हुए कह रहा है कि यह सब हमें तब ही मिलता है, जब हम पर उस प्रभु की कृपा हो जाती है। स्पष्ट है कि प्रभु की कृपा के बिना हम कुछ भी पा नहीं सकते। अतः हम सदा प्रभु की कृपा, प्रभु की दया प्राप्त करने का यत्न करते हैं, प्रयास करते हैं ताकि हम मन वांछित वस्तुओं को प्राप्त कर सकें। जो वस्तुएँ अब तक हमने प्राप्त नहीं कीं, उन्हें पाने का नाम ही जोड़ है, योग है। यह योग, यह जोड़ प्रभु की सहायता के बिना, प्रभु के आशीर्वाद के बिना हम प्राप्त नहीं कर सकते।

2. धन ऐश्वर्यों के स्वामी हों

हमें धन प्राप्ति के लिए हमारे वह पिता सदा सहायक होते हैं। जितने प्रकार के भी धन हैं, उन सब को प्रभु ही विजय करते हैं, प्राप्त कराते हैं। जीव सदा अधिकतम धन पाना चाहता है किन्तु अनेक बार वह यत्न से भी इसे प्राप्त नहीं कर पाता। इस से स्पष्ट होता है कि जब तक प्रभु का आशीर्वाद नहीं मिल जाता, तब तक हम यह धन प्राप्त नहीं कर सकते। अतः सब प्रकार के धनों को विजय करने वाले, प्राप्त कराने वाले हमारे यह पिता ही हैं।

3. सात्विक बुद्धि पाएँ

जो प्रभु सब प्रकार के धनों को प्राप्त कराने वाले हैं, वेद के इस सूक्त के इस तीसरे मन्त्र के तीसरे भाग में बता रहे हैं कि वह प्रभु हमारा पालन करने वाले भी हैं। हमारे पालन के लिए, हमें स्वावलम्बी बनाने के लिए जहाँ धनों की आवश्यकता होती है, वहाँ उत्तम पालन के साथ ही साथ हमें पूर्ण बनाने वाली उत्तम बुद्धि की भी आवश्यकता होती है किन्तु उत्तम बुद्धि सात्विक भोजन के बिना, सात्विक अन्न के बिना नहीं मिल सकती। अतः वह प्रभु हमें सात्विक अन्नों के साथ मिलाने वाले हैं। अतः प्रभु हमारे लिए उत्तम व सात्विक अन्न की व्यवस्था करके देते हैं ताकि हम पूर्ण व उत्तम बुद्धि के स्वामी बनकर उत्तम पालन के योग्य बन सकें।

जब उत्तम व सात्विक अन्नों का उपभोग किया जाता है तो हमारी बुद्धि भी सात्विक बनती है। जब बुद्धि में किसी प्रकार की बुराई नहीं होती, किसी प्रकार का छल–प्रपंच नहीं होता तो ऐसी बुद्धि को सात्विक बुद्धि कहते हैं। ऐसी सात्विक बुद्धि ही सब प्रकार के उत्तम धनों को प्राप्त कराती है। सात्विक बुद्धि के बिना जो धन नहीं मिल सकते, वह उत्तम धन इस सात्विक बुद्धि से ही मिलते हैं। इसका भाव यह है कि जो अब तक हमने प्राप्त नहीं किया था, वह सब हमने इस सात्विक बुद्धि से, प्रभु के आशीर्वाद से पा लिया किन्तु जो पाया उस पर हम गर्व नहीं करते, उस पर हम अभिमान नहीं करते। हम इन सब उपलब्धियों का, इन प्राप्तियों का, इन सफलताओं का कारण उस पिता का, उस प्रभु का वरदान ही समझते हैं।

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी 2 गाजियाबाद (उ.प्र.) भारत
चलभाष 09718528068

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा का भ्रमजाल

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

मूर्ति पूजा एक भ्रम व अन्धविश्वास है बहुत से कहते हैं कि यह तो आस्था है, श्रद्धा है। यह उनकी भूल है। जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही मानना चाहिए। मूर्ति जो पाषाण आदि की बनी है वह है तो पाषाण ही जड़ है उसमें न प्राण है न हाड मांस व रक्त संचरण है न उसमें कर्मेन्द्रियाँ हैं न ज्ञानेन्द्रियाँ है न बोलती न चलती न खाती न पीती, कोई जीवन की क्रिया नहीं। वह अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकती परन्तु मंदिरों के पंडित पुजारी जनता को सदैव भ्रमित किया करते हैं कि यह सब की रक्षा करती है इस प्रकार के झूठे ढोंगी लोगों ने झूठी आस्था दिखाकर अपना व्यवसाय चला रखा है और यही कारण है कि ऐसे मन्दिर है जहाँ स्वर्ण व रुपयों के ढेर लगे हैं क्योंकि झूठी आस्था वाले यहाँ धनादि चढ़ाते रहते हैं।

यदि गोबर में हलवा की आस्था कर लें तो वह हलवा नहीं बन जाता रहेगा तो गोबर ही। लिखने की कलम में तलवार की आस्था कर लें तो वह तलवार का कार्य तो नहीं कर सकती, रहेगी तो कलम ही, हाँ लिखने का काम अवश्य करेगी। झूठी आस्थाओं से हमने बहुत कुछ खोया है मन्दिरों में सदैव धन रुपया आभूषण चढ़ाते रहे जो धन आर्थिक रूप से कमजोर को निर्धन को देना था नहीं दिया, आवश्यकता वाले को देना था नहीं दिया एक निर्धन के पास वस्त्र नहीं है ठण्ड में ठिठुर कर प्राण त्याग देता है उसे देना पुण्य का कार्य था उसे न देकर मन्दिर की मूर्ति के चरणों में चढ़ा दिया। एक बेसहारा स्त्री के शिशु के लिए दूध नहीं मिलता। शिशु दूध न मिलने से भूखा छटपटाता है, भूख से एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है, उसे दूध नहीं दिया मूर्ति पर चढ़ा दिया। मूर्ति ही कौन सा दूध पीती है वह बहकर नाली में गया अनेक मूर्तियों को मनों दूध से नहलाया जाता है भारत में ऐसे बहुत से नौनिहाल है लाखों हैं जो दूध से वंचित हैं उन्हें दूध न दे पाषाण की जड़ मूर्तियों का अभिषेक करते फिरते हैं वह दूध नहीं पीती फिर भी मुँह से बर्तन लगाकर पिलाते हैं ऐसे लोग अपने मस्तिष्क पर जोर नहीं देते। विवेक उनका घास चलने चला गया क्योंकि वह मूर्ति है पाषाण व धातु की है कैसे दूध पी लेगी? यह घोर अन्ध विश्वास है। वह दूध नालों में बहकर चला जाता है।

आज लाखों करोड़ों परिवार ऐसे हैं जो फुटपाथों पर पड़े हैं रहने को स्थान भी नहीं है परन्तु एक मूर्ति लगाकर सैकड़ों बीघा धरती घेर दी जाती है। मेरा अर्थ उन मूर्तियों से है जिन्हे देवी देवता व भगवान ईश्वर मान कर पूजा अर्चना की जा रही है। यह काल्पनिक है और ईश्वर की तो कोई मूर्ति ही नहीं क्योंकि वह तो सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, अनादि है उनकी कोई प्रतिमा ही नहीं। वेद में कहीं भी मूर्ति पूजा नहीं फिर भी पुजारी पण्डे मूर्तियाँ स्थापित करा अपना व्यवसाय चलाने को जनता को भ्रमित कर दिन रात मूर्ति पूजा करा रहे हैं।

मूर्ति के नाम पर बलि तक दी जाती है। अनेक आदिवासी क्षेत्रों में ऐसे मन्दिर है जहाँ पशुओं को काटा जाता है। पहले यह प्रथा बहुत थी। आर्य समाज के प्रचार से बहुत कम हो गयी। पशुओं की बलि कहीं भी धर्म के नाम पर हत्या है, अमानवीय कर्म है। पशुओं को काट कर खाना राक्षसों का कार्य है यह अत्याचार बन्द होना चाहिए। भारत विभिन्न मत मतान्तरों वाला देश मान लिया गया है परन्तु उनमें केवल वैदिक धर्म ही ऐसा है जहाँ संसार का उपकार करने की भावना है, मानवता है, 'सर्वे भवन्तु सुखिन : सर्वे सन्तु निरामया' की भावना है उसमें आर्य ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति और मानव ही नहीं अपितु समस्त जीव जन्तु और सब वनस्पतियों के ठीक व स्वस्थ रहने की कामना है समस्त वायु जल पृथिवी सभी शुद्ध व पवित्र रहें ऐसी भावना केवल वेद में ही है अन्य कहीं भी ऐसी भावना नहीं है।

विदेशी लुटेर यहाँ आए, उन्होंने मन्दिरों को तोड़ा, निवासियों को मारा काटा, रक्त बहाया। मन्दिरों में से लाखों टन स्वर्ण चाँदी आदि की मूर्तियों को तोड़ कर ले गए। मोहम्मद बिन कासिम आया इल्तुतमिश, गजनवी, गौरी, तैमूर शाहअब्दाली आदि ने धरती पर अत्यधिक रक्त बहाया। बहादुर योद्धा वीर गति को प्राप्त होते रहे, मूर्ति एक भी मन्दिर से नहीं निकली जो शत्रुओं का मैदान साफ कर देती। भारत में ईश्वर की झूठी आस्था ने हमारे देश में लूटपाट करायी, रक्त बहाया।

713 ई. में मौ. बिन कासिम आया। सिन्ध के पुजारी से वेश बदल कर मिला। सेना वीर थी, यशस्वी थी परन्तु मन्दिर के पुजारी पर अन्ध श्रद्धा थी। पुजारी लोभी था, कासिम से मिल गया। उसने सेना से कह रखा था कि जब तक झण्डा लहराता रहेगा तुम्हें कोई ताकत हरा नहीं सकती जिस दिन वह झण्डा झुक जायेगा, हार जाओगे। पुजारी को कासिम ने आधा राज्य, जीतने पर देने को कहा। पुजारी ने अगली बार झण्डा स्वयं झुका दिया सेना यह देख जो शक्तिशाली थी बहादुर थी वहाँ खलवली मच गयी कि झण्डा झुक गया अब हम नहीं जीतेंगे, सेना हार गयी, दाहिर मारा गया। कासिम ने सिन्ध पर अधिकार कर लिया।

थानेश्वर मथुरा काशी सोमनाथ के अनेक मन्दिरों को शत्रुओं ने ध्वस्त कर दिया। सोमनाथ के पुजारी ने कहा था कि हमारे मन्दिर में साक्षात भगवान जी हैं, वे शत्रु को समाप्त कर देंगे। गजनवी आया, मन्दिर को तोड़ा, पंडितो को इस्लामी बना स्वर्ण को हाथियों पर ढो कर ले गया। मन्दिरों से एक भी मूर्ति शत्रु को मारने को नहीं निकली, ऐसी अन्धी श्रद्धा से क्या लाभ। मूर्ति पूजा हमारा भ्रम व अन्ध विश्वास है जिसमें समाज जकड़ा हुआ है।

मूर्ति पूजा को छोड़ हमें उस परमपिता परमात्मा को ही मानना चाहिए उसी की उपासना करनी चाहिए। उसी की उपासना करना चाहिये जो सच्चिदानन्द स्वरूप है, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, अजन्मा, अनादि व अनन्त है, सृष्टि को बनाने वाला वही दयालु ईश्वर है। हमने उसके नाम की मूर्ति ही बना डाली और पूजा अर्चना करने लगे।

हमें नित्य प्रति ओ३म् का जप करना चाहिए सन्ध्या अग्नि होत्र करना चाहिए। अपने मन के मैल को पवित्र वेद ज्ञान से धो डालना चाहिए। यम नियम प्राणायाम से आत्मबल को बढ़ावें जैसा हमारे ऋषि महर्षि करते थे उनके रास्ते पर चलना चाहिए मूर्तियाँ कोई ईश्वर नहीं, प्रतिमाओं पर पुष्प फल नैवेद्य दूध चढ़ाने से सब व्यर्थ जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के मन्तव्यों को समझें। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को पढ़ें व पढ़ावे वेद में तो कहीं भी मूर्ति पूजा नहीं बताई गई है, न ही मूर्ति पूजा वेद सम्मत है अपितु लिखा है "न तस्य प्रतिमा अस्ति।" अर्थात् उस ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं उसका कोई आकार नहीं तो मूर्ति कैसे बना लीं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश आदि उस एक ईश्वर के ही नाम हैं जिनकी लोगों ने मूर्तियाँ बना मन्दिरों में स्थापित कर पूजना आरम्भ कर दिया। हमारे ऋषि मुनि सदैव सन्ध्या उपासना व अग्निहोत्र ही किया करते थे, वही हमें करना चाहिए।

चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा
मो. 8979794715

☞ पृष्ठ 03 का शेष

शिवरात्रि को ऋषि...

का उन्होंने विरोध किया और दलितों की शिक्षा व समानता के अधिकारों का समर्थन किया। उन्होंने कहा है कि विद्या व ज्ञान से सर्वथा शून्य मनुष्य की संज्ञा ही शूद्र है जिसे द्विजों व विप्रों के यहां भोजन पकाने आदि का कार्य करने के विधान का उन्होंने समर्थन किया है। हमारे मित्रों ने बताया है कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह स्वामी दयानन्द के कट्टर अनुयायी थे। वह किसी दलित बन्धु को ही अपना रसोइया रखते थे। दलितोद्धार के क्षेत्र में भी ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने उनकी प्रेरणा के अनुरूप उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज ने गुरुकुल व दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूलों की स्थापना कर देश से अज्ञान दूर करने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में विज्ञान को भी उचित महत्त्व दिया। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहते तो देश में विज्ञान पर आधारित उद्योगों की स्थापना में भी अग्रणी भूमिका निभाते। स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शुद्धि का समर्थन व प्रचार किया और स्वयं देहरादून में मोहम्मद उमर नाम के एक व्यक्ति व उसके परिवार को शुद्ध कर वैदिक धर्मी बनाया था। देश और विश्व कल्याण के दन सब कार्यों का श्रेय स्वामी दयानन्द को 12 फरवरी, 1839 की शिवरात्रि को हुए बोध का परिणाम कह सकते हैं। इस बोध का ही परिणाम है कि देश अज्ञान से काफी कुछ दूर होकर ज्ञान की ओर अग्रसर हुआ है। अभी धर्म के क्षेत्र में वेदों को उसकी महत्ता व गरिमा के अनुरूप उचित प्रतिष्ठा मिलना बाकी है। ऋषि दयानन्द की यदि अचानक मृत्यु न होती तो वह इस कार्य को पूरा करने का हर सम्भव प्रयत्न करते। इसी काम को करते हुए उन्होंने अपना बलिदान देकर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। ऋषि को शिवरात्रि के दिन जो बोध हुआ था, उस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। लेख की सीमा को ध्यान में रखकर हम इसे विराम देते हैं। आगामी ऋषि बोध दिवस पर हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं।

इस लेख को लिखते हुए अब से लगभग 15 मिनट पूर्व रात्रि 10.32 बजे भूकम्प का हमें तेज झटका लगा। इससे हमें 10 मिनट के लिए विराम लेना पड़ा। हम पुनः लेख के समापन में जुट गए। ईश्वर की कृपा से यह पूरा हो गया है। ओ३म् शम्!

पता: 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन: 09412985121

www.thearyasamaj.org

हमें बोध कब होगा

● डॉ. महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि, सत्यज्ञान, आत्मबोध, परमात्मज्ञान एवं जड़–चेतन के सत्यबोध का प्रेरक पर्व है। यह तिथि प्रतिवर्ष जागने, संभलने, श्रेष्ठ विचारों, व्रतों संकल्पों और जीवनोद्देश्य को बताने एवं दुहराने के लिए आती है। आर्य समाज के इतिहास में और ऋषि भक्तों के लिए इसका विशेष महत्व है। मूलशंकर और आर्यों के लिए यह शिवरात्रि बोधरात्रि बन गई। टंकारा मंदिर की वह ऐतिहासिक, प्रेरक एवं जनजागरण की रात थी। जिसने मूलशंकर को ऋषि दयानन्द बना दिया। शिवरात्रि पर वे स्वयं जागे और जीवन भर लोगों को जगाते रहे तथा जीवन–जगत् का सत्यबोध कराते रहे। मूलशंकर ने प्रेरक भजन की पंक्तियों को व्यावहारिक रूप दिया–

"जो जागत है, वह पावत है जो सोवत है वह खोवत है"

शिवरात्रि की रात को मूलशंकर के हृदय में दिव्य–ज्ञान–ज्योति का प्रकाश हुआ! मुझे यहां जिस परमेश्वर की पूजा के लिए लाया गया है, यह वह नहीं है। शिव के जो गुण और विशेषताएं बताई गई थीं वे इनमें नहीं हैं। मूलशंकर ने सत्य–तत्वज्ञान के एक झटके में मिथ्या–अज्ञान व भ्रांति को तोड़ दिया। उनके जीवन में यह शिवरात्रि जीवन परिवर्तन का कारण बनी। वे एक रात जागे, फिर कभी जीवन में नहीं सोये। आर्यसमाज के लिए यह शिवरात्रि प्रभु का वरदान सिद्ध हुई। यदि मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि न आती, तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि दयानन्द न होते तो आर्यसमाज न होता। यदि आर्यसमाज न होता तो देश, धर्म, संस्कृति, वेद, यज्ञ, नारी और हमारी सबकी क्या दशा व दिशा होती? इतिहास साक्षी है– छोटी–छोटी बातों, घटनाओं, ठोकरों और प्रेरक उपदेशों से जीवन का रंग–ढंग ही बदल जाता है। भोगी–विलासी, दुर्व्यसनी जीवन, तपस्वी, त्यागी और परोपकारी बन जाते हैं। पतित जीवन में पवित्र जीवन बन गए। कोई नास्तिक से आस्तिक हो गया। एक वाक्य ने कीचड़ में फंसे हीरे को अपनी पहचान करा दी।

पर्व, जयन्तियां, उत्सव, सम्मेलन और धार्मिक कार्यक्रम हमें जगाने, संभालने, सुधरने, ऊपर उठने तथा सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा व संदेश देते हैं। हर साल शिवरात्रि हमें जगाने आती है। हमारे सबके जीवनों में कितनी शिवरात्रियां आईं और बाहर की धूमधाम, तड़क–भड़क व लोकाचार में निकल गईं। कहीं प्रेरणा, चेतना, भावशुद्धि जीवन–परिवर्तन आदि नज़र नहीं आता। जो सच्चे शिवरूपी परमात्मा से मेल व बोध करा दे, वह सच्ची शिवरात्रि है बाकी सोने की व संसारी रातें है। आज हम इतने भौतिकवादी, एवं भोगवादी हो रहें हैं– कहीं रचनात्मक, सुधारात्मक, निर्माणात्मक, परिवर्तन नज़र नहीं आता है। कहीं बुराई, पाप, अधर्म, दुर्गुण, दुर्व्यसन आदि से छूटने की झलक–बैचेनी तथा वेदना नहीं मिलती। कहीं कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जो संकल्प, व्रत एवं भावना से कहता हो,– मैंने अमुक कथा, प्रवचन, उत्सव, यज्ञ, पर्व आदि से प्रेरणा लेकर, झूठ बोलना छोड़ दिया। सुबह शाम परमात्मा का स्मरण व धन्यवाद करना आरंभ कर दिया है। मैंने व्रत लिया है– सपरिवार–समाज–मंदिर में यज्ञ, भजन, प्रवचन में जाया करूँगा। ऋषि के मिशन के लिए त्यागभाव से सेवक बनकर कार्य करूँगा। धार्मिक संगठनों, सभाओं और समाज–मंदिरों में पदों की दौड़ में नहीं दौडूँगा। आर्यत्वपूर्ण जीवन व्यतीत करूँगा। स्वाध्याय, सत्संग, प्रभुभक्ति सेवा आदि में रुचि व प्रवृत्ति को विकसित करूँगा। जो जीवन व समय बचा है, उसे सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण ढंग से जीऊँगा। वर्तमान आर्यसमाज की शक्ति, समय, सोच, धन, भागदौड़ आदि व्यर्थ के विवादों संघर्ष, उलझनों, झगडों व गुटबाजी में जा रही है। आर्यसमाज की आन्तरिक स्थिति प्रेरक सन्तोषजनक, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय नहीं बन पा रही है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। जो आर्य समाज में होना चाहिए वह हो नहीं रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है? बोधोत्सव हमें कह रहा है– उठो! जागो! अपने को संभालो! अपने कर्त्तव्य व लक्ष्य को समझो। यह अल्प जीवन बड़ी तेज़ी से बातों–बातों में निकला जा रहा है। वेद पुकार पुकार कर कह रहा है–

"यो जागार तम् ऋचा कामयन्ते"

जो जागता है उसे ही सत्यज्ञान का बोध होता है। जिसे आत्मज्ञान हो गया, वही जीवनोदेश्य को प्राप्त कर पाता है। अधिकांश लोग अनजाने में आते, जीते और अनजाने में ही संसार से चले जाते हैं। यह शिवरात्रि आत्मबोध का भी पर्व है। मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? किसलिए आया हूँ? हमारा कर्त्तव्य, धर्म एवं लक्ष्य क्या है? कहां के लिए चले थे? कहां जा रहे हैं? क्या खोया? क्या पाया? अनेक ज्वलन्त प्रश्न हमसे उत्तर मांग रहे हैं? हमने संसार परिवार परिचितों आदि के लिए बहुत कुछ किया? जो हमारे साथ जायेगा, वह कितना किया? नहीं तो उपनिषद् कहती है– **"महती विनष्टिः"** यह जीवन की सबसे बड़ी हानि हुई। समय, साधनों शक्ति और जीवन के रहते कुछ कर सको तो करलो, जीवन को संभाल सको, तो संभाल लो। हम दुनिया के भोग–पदार्थों, चीजों, साधन सुविधाओं आदि के बारे में बहुत कुछ जानते हैं किन्तु आत्मा परमात्मा के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। हमारी अन्दर की दुनिया सोई और खोई पड़ी है। जलसे–जलूसों, लंगरों, सम्मेलनों आदि की धूम मच रही है। किन्तु हमारी सोच, स्वभाव, आदतें, व्यवहार तथा जीवन वहीं का वहीं खड़ा है। उम्र का बड़ा हिस्सा निकल गया, फिर भी ज्ञान, विचार, विवेक, वैराग्य, आदि के भाव जीवन में नहीं आ पा रहे हैं? संसार और विषय भोगों के पीछे पागलों की तरह दौड़े जा रहे हैं? इच्छाओं, वासनाओं, असंतोष तथा अशान्ति की बैचेनी बढ़ती जा रही है। हमें कब बोध होगा? हम कब जागेंगे? कब संभलेंगे? हम अपना बोध दिवस कब मनाऐंगे? हमारे कीर्तनों में सच्ची शिवरात्रि कब आयेगी? मूलशंकर के जीवन में बोध दिवस आया, वे ऋषि दयानन्द बन गए। ऋषि से प्रेरणा व शिक्षा लेकर हम सबको अपना बोधोत्सव मनाने की ज़रूरत है। जब हमारे जीवन जगत् में बोधोत्सव घटित हो जायेगा, तब व्यर्थ की बातें पद प्रतिष्ठा, अहंकार तथा बाहर की भाग दौड़ स्वतः रुक जायेगी। जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल जायेंगे। यह पर्व चिन्तन–मनन, कुछ करने, देने–लेने, छोड़ने, संभलने व सुधरने का संदेश तथा प्रेरणा दे रहा है। आज धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर ढोंग पाखण्ड, गुरुडम, आडम्बर, प्रदर्शन, पूजा–पाठ, गुरुवाद आदि तेज़ी से बढ़ रहे है। व्यक्ति पूजा और जड़ पूजा तेज़ी से प्रचारित व प्रसारित हो रही है। बोधोत्सव कह रहा है– जड़पूजा से चेतनपूजा की ओर चलो। शरीर के साथ साथ चेतन आत्मा का भी चिन्तन करो। भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ो। भोग से योग की प्रवृत्ति बनाओ। प्रकृति से परमात्मा की ओर बढ़ो। सुख से आनन्द की ओर चलो। यही जीवन जगत् का सारतत्त्व है। इस महापर्व का मौलिक चिन्तन, दृष्टि एवं संदेश है – हम जीवन–जगत, आत्मा–परमात्मा, भक्ति–धर्म, धर्मग्रन्थों महापुरुषों आदि का सत्य बोध प्राप्त कर जीवन को आत्मा परमात्मा से जोड़ें। तभी बोधत्सव मनाने की उपयोगिता, सार्थकता, व्यावहारिकता एवं प्रासंगिकता है। सभी के जीवनों में बोधोत्सव का सन्देश घटित हो ऐसी प्रभु से प्रार्थना और कामना है।

बी.जे. 29 पूर्वी
शालीमार बाग दिल्ली
9810305288

ग्रामीण "चक्रव्यूहीय भेदन" की रूपरेखा

● रवीन्द्र पोतदार

यद्यपि वर्तमान 'नोट बंदी' का असर ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखने को मिला है, परंतु अगर भारत को कृषिप्रधान देश ही रहना है तब ग्रामों के वर्तमान स्वरूप को ही देश की इकाई के रूप में तब्दील करना होगा। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि शहरों के औद्योगिकीकरण को ग्रामों की ओर बढ़ाना, वरन् शहरों को ग्राम्य (वेदोक्त) स्वरूप देना है। आदिकाल से भारत कृषि प्रधान देश होने के साथ लगभग 200 वर्ष पूर्व तक संसार का सबसे बड़ा औद्योगिक उत्पादन का निर्यातक रहा है। वे उद्योग प्रकृति साम्य थे न मीडियम ना लार्ज क्षमता के। उनसे न तो प्रदूषण होता था न ही प्रकृति का अनावश्यक दोहन। हमारे यहाँ अगर कोई लार्ज स्केल इन्डस्ट्री रही है तो वह थी गोपालन'' अर्थात् करोड़ों गायें पाली जाती थीं। उनसे घृत–दूध से लेकर चमड़े इत्यादि का विपुल उत्पादन होता था। सत्यवक्तृता–मितव्यायिता–हुण्डी, अशर्फी (सुवर्ण) आदि नगदी के आधार से कैश–लैस वा लैस–कैश द्वारा व्यापार होता था। और इसीके आधार पर हमारा देश सोने की चिड़िया बन गया था।

यूएनओ पर युद्धप्रिय, विस्तारवादी एवं तथाकथित विकसित देशों का प्रभुत्व है। विकास का तात्पर्य है, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस प्रमाण से ये न तो उन्नत हैं न उन्नतिशील, क्योंकि इनका शील तो विस्तारवादिता एवं 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' ही है। शिक्षा इसके लिए आजीविका का साधन मात्र है। अगर ऐसा है तो जंगल के जानवर हमसे अधिक शिक्षित हैं क्योंकि वे बगैर प्रकृति को क्षति पहुँचाए हृष्ट पुष्ट बने रहते हैं। और जंगल का नेता–प्रधान, शेर अपनी आवश्यकतानुसार ही शिकार करता है और उसकी आजीविका से वहाँ का प्रत्येक वर्ग फलता–फूलता और प्रसन्न रहता है। शेर और जंगल वह है जिसके पास या जिसमें जाने पर मनुष्य को भय होता हो, ना कि ये पालतू या असंतुलित प्रयोग मनुष्य की दया पर निर्भर होते हैं।

क्या अंधाधुंध कोयले इत्यादि का खनन, सड़क–सीमेंट इत्यादि के लिए हजारों कि. मी. के पहाड़ों का नाश, लकड़ी के लिए जंगलों का नाश क्रूड आइल समेत अन्य खनिजों का अनावश्यक–अत्यधिक दोहन एवं युद्ध–सीमा सुरक्षा आदि में असंतुलित प्रयोग वा नाश ही विकास की कुंजी बन गया है? और विकासशील देशों में हमारे देश की अव्वल गणना है, इसकी बानगी दिल्ली के पर्यावरण को देखकर की जा सकती है? इसका सम्पूर्ण शहरों में फैलाव कितना

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

प्रथम प्रकार के दुःखों में एक दुःख शारीरिक है। ये दुख बिना सोचे–विचारे खाने–पीने और कार्य करने से होते हैं। हमारे सामने एक थाल रख दिया किसी ने। इसमें आलू भी हैं, कचालू भी, भिण्डी भी, गोभी, मटर, अचार, मुरब्बे, रायते, खीर, बंगाली रसगुल्ले, घण्टेवाले की मिठाई, कितना ही कुछ है।

शास्त्र कहता है कि खीर और दही इकट्ठा खाओगे तो शरीर में रोग उत्पन्न होगा। हम शास्त्र की बात नहीं सुनते; जिह्वा की बात सुनते हैं। कई लोगों को तो मैंने ऐसा भी कहते सुना है कि पेट में प्रत्येक वस्तु के लिए भिन्न–भिन्न कोष्ठ हैं। किन्तु भिन्न–भिन्न कोष्ठ तो वहाँ हैं नहीं। दोषपूर्ण वस्तुओं को एकत्रित कर देने से और बहुत अधिक भोजन से अस्वस्थता होती है अवश्य। आजकल तो रिश्वत से कितने ही कार्य चलते हैं। आपको किसी स्थान पर अपना सामान भेजना है। स्टेशन पर जाते हैं। मालगोदाम वाला कहता है कि साहब, हमारे पास माल ले–जाने का वैगन नहीं। आप चाटुकारिता कहते हैं, रिश्वत देते हैं। गाड़ी पर बोझ अधिक हो जाता है। मार्ग में टूट जाती है। पटरी से उतर जाती है। इसी प्रकार लोग खाने के सम्बन्ध में भी रिश्वत से कार्य कराते हैं। अचार, मुरब्बे, चटनियाँ, जिह्वा को रिश्वत के तौर पर दी जाती हैं– इस प्रार्थना के साथ कि खा लें, थोड़ा और खा लें। परन्तु मालगोदाम का क्लर्क तो रिश्वत ले सकता है। आपके माल को आगे भी भेजता है। आगे जाकर पेट की खराबी सब रोगों की जड़ है। इस प्रकार शारीरिक दुःख हम स्वयं उत्पन्न करते हैं। और शारीरिक ही क्यों? मानसिक दुःख–जिनका सम्बन्ध मन से है, इन्हें भी हम स्वयं ही उत्पन्न करते हैं हम सोच लेते हैं कि अमुक व्यक्ति भी मेरा शत्रु है। फिर उस पर क्रोध करते हैं, घृणा करते हैं। सोचते हैं कि इसे क्रोध और घृणा से जलाकर राख कर देंगे। वह तो पता नहीं जलेगा या नहीं, परन्तु पहले अपने क्रोध से हम स्वयं तो अवश्य ही जलते हैं। दूसरे पर फेंकने के लिए कीचड़ तो उठा लिया हमने हाथ में, वह दूसरे पर गिरेगा या नहीं किन्तु हमारे हाथ तो अवश्य ही मैले होंगे।

कई लोग कहते हैं कि हम भजन के लिए बैठते है तो चित्त नहीं लगता। और चित्त लगे किस प्रकार? वहाँ तो तुमने घृणा, नीचता, ईर्ष्या, मत्सरता, शत्रुता, क्रोध की अग्नि जला रखी है। जान–बूझकर अपने–आपको अशान्त बना रखा है। फिर शान्ति क्यों मिलेगी।

कभी किसी झील, तालाब या नदी में एक पत्थर फेंककर देखो। पत्थर गिरते ही लहरें उत्पन्न होंगी; किनारे की तरफ बढ़ेंगी। किनारे से टकराकर फिर वापस आएँगी। यही दशा मन की भी है। जो घृणा और क्रोध हम करते हैं, इससे लहरें उठती हैं। लहरें दूर–दूर तक जाती हैं, फिर दुगुने वेग के साथ हमारे पास आती हैं। यह आपका उत्पन्न किया हुआ दुःख नहीं तो और क्या है?

अमेरिका के एक डॉक्टर ने क्रोध की दशा में लिए गए श्वासों को एक बोतल में भरा। घृणा और शत्रुता के उद्‌गारों के समय निकलने वाले श्वासों को भी जमा किया और तब देखा कि एक घण्टे के अन्दर क्रोध की दशा में जो श्वास मनुष्य से बाहर निकलता है, इसमें इतना विष है कि यदि वह श्वास नील सूअरों में इंजेक्शन द्वारा प्रविष्ट कर लिया जाए तो वे मर जाएँगे।

इस प्रकार हम अपने दुःखों को आप ही उत्पन्न करते हैं। अपने लिए दुःख को स्वयं ही उत्पन्न करने का एक कारण मोह है। हम ऐसा समझ लेते हैं कि मैं, मैं नहीं हूँ, प्रत्युत परिवार हूँ। अपनी सम्पत्ति हूँ, अपना निश्चित विभाग हूँ। अपना बेटा, बीबी, बच्चा हूँ। अपना मकान और दुकान हूँ। इस प्रकार समझ लेने से बुद्धि का नाश होता है, और बुद्धि का नाश होने से मनुष्य का सर्वनाश होता है। अपने–आपको केन्द्र बनाकर सब वस्तुओं को और सब लोगों का हम अपने–आप में लपेट लेना चाहते हैं। कोई पुरुष है, कोई स्त्री है। उससे प्रेम कर लिया और समझ लिया कि इसका दुःख हमारा दुःख है। इसके सिर में पीड़ा है तो तो रोएँगे हम। उसकी आँखें दुखती हैं तो चिल्लाएँगे हम। आखिर क्यों? एक सज्जन का मकान जल गया। मैं उससे मिलने गया। वह फूट–फूटकर रो रहा था– 'हाय! मैं जल गया!' मैंने सुनकर कहा– 'अरे, तू जल गया तो यह बोलता कौन है? क्या तेरा भूत? तू मकान नहीं है। मकान जल गया तो जल जाने दे, तू नहीं जला।'

आप कहेंगे– आनन्द स्वामी, तू हो गया फकीर। हमें यह उपदेश क्या देता है? यदि हम मोह न करें तो सन्तान की रक्षा किस प्रकार करें? इन्हें पालें कैसे? मैं कहता हूँ कि मैं सन्तान की रक्षा और पालन को छोड़ देने के लिए नहीं कहता। रक्षा करो और पालन करो अवश्य। मोह में फँसकर नहीं करो। केवल कर्त्तव्य समझकर करो। चिड़िया और पक्षी भी अपनी सन्तान की रक्षा करते हैं। तो क्या यह सोचकर करते हैं कि जब हम बूढ़े हो जाएँगे तब वे हमें खिलाएँगे? ऐसी भावना छोड़ दो दुःख का नाश हो जाएगा। गत वर्ष मैं आर्यसमाज हनुमान रोड़ पर ठहरा हुआ था तो एक मनुष्य मेरे पास आया। आकर दुःखी स्वर में बोला, मैं बहुत दुःखी हूँ, मेरे साथ पटेल नगर चलो। मैंने पूछा कि दुःख क्या है? उसने कहा– 'मेरे दो पुत्र हैं, दोनों कमाते हैं, अच्छी पदवियों पर हैं। स्वयं भी पेन्शन पाता हूँ तीन सौ रुपया मासिक।' मैंने कहा– 'यह तो हर्ष की बात है, इसमें कष्ट क्या हुआ? वह संवेग से रो उठा। कमीज़ उठाकर अपनी पीठ दिखाई। रोता हुआ बोला– 'स्वामी जी, यह देखिए।' मैंने देखा– उसकी पीठ पर बीसियों चिह्न थे। काँपकर मैंने पूछा– 'यह किसने किया?' उसने कहा– 'मेरे पुत्रों ने। प्रतिमास जब मेरी पेन्शन आती है तो एक पुत्र कहता है कि सारे रुपए मुझे दे दो। दूसरा कहता है कि मुझको दे दो। और मैं कहता हूँ सौ रुपया एक ले लो, सौ दूसरा, सौ मेरे पास रहने दो। वे कहते हैं कि तीन सौ के तीन सौ दे दो। तब मार–मारकर मूर्च्छित कर देते हैं। ईश्वर के लिए चलो, चलकर उन्हें समझाओ।' मैंने कहा– चलो चलता हूँ तुम्हारे साथ। परन्तु उसके घर जाकर देखा– एक लड़का एक कमरे से कुर्सी पर डटा बैठा है, दूसरे में दूसरा। उनका ढंग मुझे नहीं जँचा। तब इस मनुष्य को मैंने एक और कमरे में ले–जाकर पूछा, 'कितनी पेन्शन मिलती है तुम्हें?' उसने कहा, 'तीन सौ।' मैंने कहा– 'फिर तुम यहाँ रहते हो? तपोवन में जाकर रहो, घर छोड़ दो। यही लड़के तुम्हार मान करेंगे। तुम्हारे पैर चूमेंगे। मुझे देखो, मैंने अपना घर छोड़ दिया। मेरे पुत्र मेरे पीछे–पीछे भागे फिरते हैं। कोई कहता है– रुपए ले लो। कोई कहता है– यह वस्तु ले लो। प्रत्येक को चिन्ता है कि मेरा आदर वह दूसरे से बढ़कर करे। चल मेरे साथ! मैं तपोवन का मार्ग बताऊँ।' वह गिड़गिड़ाकर बोला– 'कैसे जाऊँ! उन लड़कों का मोह मुझे नहीं जाने देता।' मैंने हँसकर कहा– 'तो फिर मार खाते रहो बच्चू! शिकायत क्यों करते हो? अपना दुःख उठाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि बच्चों की रक्षा और पालन न करो। करो अवश्य, परन्तु इस प्रकार करो जैसे अध्यापक, स्कूल का मास्टर और कॉलेज का प्रिंसिपल अपने विद्यार्थियों की करता है। सद्‌व्यवहार के साथ गृहस्थाश्रम को चलाओ, किन्तु मोह में नहीं फँसो। अब समय हो गया पूरा। इसलिए– ओ३म् शम्!

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 08 का शेष

ग्रामीण "चक्रव्यूहीय भेदन...

भयानक होगा कल्पना कीजिए? असंतुलित प्रयोग का अर्थ है किसी भी पदार्थ का वेदों में वर्णित उपयोग वा उपभोग से अधिक इस्तेमाल करना, अनावश्यक दोहन करना इत्यादि। दिव्यदृष्टि से देखा जाए तो आज संसार में व्याप्त सभी बुराइयों अथवा अभावों या कहें कष्टों का कारण यज्ञ विहीनता ही है। कहा गया है "यज्ञो एव भुवनस्य नाभिः अर्थात् जिस नाभि अथवा नाड़ी से गर्भ में बच्चों का पालन होता है, इस मानव के लिए वही कार्य "यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता है।" यह कार्य अत्यल्प मात्रा में सही, परन्तु ग्रामो में धूपदान अथवा अन्य किसी सम्प्रयोग द्वारा घृत से वायुमण्डल की शुद्धि हेतु आज भी प्रत्येक घर में होता है। अतएव ग्रामीण अल्प सुख एवं कुछ पर्यावरण शुद्धि में एक कारण यह भी है।

ग्राम्य वातावरण में आज भी दैनिक लकड़ी प्राप्त कर प्रयोग में लाने वाले परिवार हरी लकड़ी काटने से गुरेज़ करते हैं। वहाँ के वातावरण में गो अथवा पशुपालन, प्रकृति प्रेम, सहकारिता, यथा संभव गोबर के खाद का प्रयोग, फसल चक्र, लैस–कैश वा कैश–लैस व्यवहार इत्यादि कारण हैं, जो उसे विश्वमंदी वा नोटबंदी, दूषित पर्यावरण तथा विश्वयुद्ध के प्रभावों से यथासम्भव दूर रखते हैं। अगर यू एन ओ अपने ग्राम नाश एंव शहरीकरण के उद्देश्य में सफल हो जाता है तब तो सर्वनाश निश्चित है।

आज अधिकतर रोगों में कारण दूषित एवं मिश्रित खाद्य तेल हैं और इसके बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण ग्रामों में जो छोटी तैलघानियाँ थीं उनका नाश हो गया। छोटी घानियाँ आज भी स्थापित कर दी जाएँ, जो सम्भव है, तब तो फसलचक्र की स्थापना एवं कई बीमारियों से बचा जा सकता है, तथा इसके कई दूर गामी प्रभाव अत्यंत लाभदायक होंगे।

ग्रामीण विकास के लिए मुख्य रूप से दो ही आवयकताएँ हैं। पहला शिक्षा एवं दूसरा गो एवं पशुपालन अगर शिक्षित के लिए बहस, मुबाहिसा वा शास्त्रार्थ हो तो निश्चय ही महर्षि द्वारा विरचित "सत्यार्थ प्रकाश" के तीसरे समुल्लास में वर्णित "सम्पूर्ण शिक्षा" ही स्थापित होगी। और अगर गो एवं पशुपालन का ईमानदार प्रयास हो तो महर्षि द्वारा वर्णित गोकृष्यादि राक्षिणी सभा" का ही आगाज़ होगा। ये दोनों ही ग्रंथ सही मायने में सेक्युलर या जैसा इसका अर्थ लिया जाता है "पंथ निरपेक्ष" हैं। कुछ तथाकथित विद्वान् इनको जाने बिना संसद से लेकर सड़क तक जो इनकी निन्दा करते हैं वे निश्चय ही अपना और जनता का भला नहीं कर रहे हैं और इन महान ग्रंथों की भावना को न्यायपूर्वक न जानकर, भ्रम फैलाकर सर्वनाश का आगाज़ ही कर रहे हैं? वैदिक जन ऐसे लोगों या शासन की भर्त्सना करते हैं।

चन्देसरा–उज्जैन–456664

www.thearyasamaj.org

पत्र/कविता

आर्य जगत् का श्रद्धानन्द बलिदान अंक था एक संग्रहणीय अंक

18–24 दिसम्बर, 2016 का अंक प्राप्त हुआ। यह अंक निश्चित रूप से, इसलिए संग्रहणीय है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का मूल्यांकन, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महावीर मीमांसक, वेद मार्तण्ड, डॉ. महेश विद्यालंकार ने किया है और इनसे पहले स्वनामधन्य पं. गंगाप्रसाद जी का लेख है। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने लेखन के अतिरिक्त, अप्रतिम विद्वान, डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती को हमें दिया है।

कोई प्रचार कुछ भी करे, मैं, साप्ताहिक आर्यजगत् को वैदिक जगत् में प्रकाशित सभी पत्र–पत्रिकाओं में सर्वोच्च स्थान पर आसीन देखता हूँ। इस अकिंचन लेखक को भी वर्षों से इस पत्रिका में स्थान प्राप्त होता रहा है। तदर्थ कृतज्ञता ज्ञापित भी करता हूँ।

अभिमन्यु खुल्लर
22, नगर निगम क्वार्टर्स
जीवानी गंज
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

****

बोधगीत

शिव शोध बोध प्रति पल पागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।
जब जाग गए तो सोना क्या।
बैठे रहने से होना क्या।
कर्तव्य पथ पर बढ़ जाओ,
तो दुर्लभ चाँदी सोना क्या।
मत तिमिर ताक श्रुति पथ त्यागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।
बन्द नयन के स्वप्न अधूरे।
खुले नयन के होते पूरे।
यही स्वप्न संकल्प जगाएँ,
करें ध्येय के सिद्ध कँगूरे।
संकल्प बोध उठ अनुरागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।
शिव निशा जहाँ मुस्काती है।
जागरण ज्योति जग जाती है।
संकल्प हीन सो जाते हैं,
धावक को राह दिखाती है।
श्रुति दिशा छोड़कर मत भागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।
बोध मोद का लगता फेरा।
मिटता पाखण्डों का घेरा।
शिक्षा और सुरक्षा सधती,
हटता आडम्बर का डेरा।
बोध गोद प्रिय प्रभु से माँगो।
जागो रे व्रत धारक जागो।।
कुल फूल मूल शिव सौगन्धी।
शंकर कर्षण सुत सम्बन्धी।
रक्षा, संचेत अमरता से,
हो जन्म उन्हीं के यश गन्धी।
योग–क्षेम के क्षितिज छँगालो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।

देव नारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.)

तथाकथित मंदिरों को शंकराचार्यों के द्वारा बंद करवाया जाए

हरिद्वार के शांतिकुंज गायत्री मंदिर, भारत माता मंदिर, पतंजलि योगपीठ, स्वर्गाश्रम; दिल्ली के कमल मंदिर, बिड़ला मंदिर, अक्षरधाम, गोरखपुर के गोरखमंदिर, मायापुर के इस्कान मंदिर, पटना व आसनसोल के महावीर मंदिर आदि जैसे सुव्यवस्थित–लोकोपकारी छोटे–बड़े सभी आदर्श मंदिरों के अलावे बाकि जितने भी धर्मशोषक (धार्मिक जुआघर, धार्मिक नशालय, अंधविश्वासगाह, अंधभक्ति के अड्डे) ये तथाकथित मंदिर हैं, उन सभी को काले–नकली नोटों की तरह शीघ्र ही हमारे पूज्य श्री शंकराचार्यों के द्वारा बंद करवा दिए जाएँ। यंत्र–मंत्र–तंत्र और ग्रह ज्योतिषादि के नाम पर इन्हीं पाखंण्ड स्थानों से हो रहे धार्मिक लूटों के ही कारण हमारे देश की महानतम वैदिक सभ्यता–संस्कृति आज मृत–सी हो चुकी है। आगे आकर कुमारिल भट्टों को अब फिर उत्सर्गी होना होगा। गुरुद्वारों–सा अपने भी शंकराचार्यों से स्वीकृत मंदिर ही वैध माने जाएँ।

पं. आर्य गिरि (भारत माता का एक धर्म सेवक)
निंगा, आसनसोल, पं. बं. – 713370
9735132б0

****

वेदों में ही ईश्वर का कथन है

संसार की प्राचीनत्तम पुस्तक ऋग्वेद का उद्घोष है– **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**। वेदों में ही ईश्वर का कथन है– **'अहम् भूमिमाददामार्याय'**। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन के मोह को **'अनार्यजुष्टम्'** कहा है। बौद्ध धर्म के सिद्धान्त को 'चार आर्य सत्य' के नाम से जाना जाता है। रामायण एवं महाभारत में सर्वत्र ही आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है। हमारे पढ़े जाने वाले संकल्प मंत्र में भी **'जम्बूद्वीपे आर्यावर्त्ते भरतखण्डे'** कहा गया है। यहाँ तक कि लोक भाषा में भी आर्य शब्द का अपभ्रंश 'आरज' शब्द का प्रयोग हुआ है। मुगलकाल (अकबर काल) में रचित तुलसीदास की 'रामचरित मानस' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द आया है– **'आरत' बस सम्मुख भजऊ बिलग न मानहुँ तात। आरसुत पदकमल बिना बादि जाहँ लगी नात'**। एक सिक्ख ग्रंथ 'पंच प्रकाश' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द प्रयुक्त हुआ है–**'जो तुम सिख हमारे आरज । देहुँ शीख धरम के कारज।।'** दिल्ली के प्रसिद्ध बिड़ला मंदिर में लगाए गए अधिकांश शिलापटो पर **'आर्य'** शब्द ही लिखा हुआ है। जानकारी के अनुसार काशी के विश्वनाथ मंदिर में मुख्य द्वार पर **'आर्यधर्मेतराणाम् प्रवेशो निषेधः'** लिखा हुआ है। इस तरह हमारे सभी प्राचीन–नवीन धर्मग्रंथ एवं इतिहास में आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है, हिन्दू शब्द का नहीं।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अपने संस्थापक का मान रखने के लिए हिन्दू समाज की एक प्रमुख संस्था आर्य शब्द को स्वीकार न करके हिन्दू शब्द के प्रयोग की जिद्द पर अड़ी हुई है। इसी संस्था के एक अनुषंगी संस्था ने राही मसूम रज़ा द्वारा महाभारत धारावाहिक का डायलॉग लिखे जाने पर जब आपत्ति प्रकट की, तो लेखक ने उनसे प्रश्न किया कि जब आपको इस्लामी भाषा के शब्द 'हिन्दू' पर आपत्ति नहीं है तो फिर हर सम्भव संस्कृत भाषा के प्रयोग करने पर भी आपत्ति क्यों? उस पर उनकी बोलती बन्द हो गई। उनसे कोई उत्तर देते नहीं बना। आखिर कब तक हम इस विदेशी भाषा से चिपककर अपमान सहते रहेंगे, जिसका हमारे ग्रंथों में उल्लेख तक नहीं है। यदि हमें दुनिया में अपमान से बचना है और गर्व से मस्तक ऊँचा कर जीना है, तो निश्चित रूप से हमें निम्न दोहे को अपने व्यवहार में चरितार्थ करना होगा–

'ओ३म है ईश हमारा, वेद हमारा धर्म।
आर्य है नाम प्यारा, यज्ञ हमारा कर्म।।
इसके अतिरिक्त और उपाय नहीं है–
'नान्यः पंथा विद्यते अयनाय'

–सूर्य देव चौधरी
झारखंड आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

****

www.thearyasamaj.org

डी.ए.वी. मुजफ्फरपुर में हुआ कम्बल वितरण

"प्रतिकूल मौसम का दंश झेल रहे निर्धन व बेसहारा ग्रामीणों की मदद करना ईश्वर को प्रसन्न करने का एक सार्थक प्रयास है" उक्त विचार प्राचार्य एस.के. झा ने डी.ए.वी. विद्यालय प्रांगण में कम्बल वितरण करते हुए व्यक्त किया। विद्यालय के सटे अस्दुल नगर उर्फ माधोपुर पंचायत के 210 (दो सौ दस) वंचितों, गरीबो एवं जरूरतमंद लोगों के बीच कम्बल का वितरण किया गया। कड़ाके की ठंड से परेशानी झेल रहे गरीबो एवं बेसहारा लोगो के चेहरे खुशी से खिल उठे। लाभान्वित जन समुदाय के उक्त सामाजिक सरोकार एवं दायित्व निर्वहन के लिए डी.ए.वी. विद्यालय परिवार का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं उनके सत्प्रयासो हेतु साधुवाद दिया।

उक्त अवसर पर प्रसिद्ध व्यवसायी मुकेश नेमानी ने ज़रूरतमंद लोगो के बीच मदद पहुँचाते रहने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी एवं डी.ए.वी. का आभार जताया।

कम्बल वितरण कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षको एवं शिक्षेकतर कर्मचारियों की भूमिका सराहनीय रही जिनमें प्रमुख रूप से बी.के. सिंह, ए.के. पांडेय, एन.के. सिंह, सी. बी. तिवारी, राकेश कुमार, आर के ठाकुर, एम. के भारती, एस.एस. मिश्रा, के.के. सिंह रहे।

उक्त कार्यक्रम की चर्चा विद्यालय के आस-पास रह रहे लोंगो में एक नयी उम्मीद व उमंग डी.ए.वी. के सामाजिक सरोकार को संबल प्रदान कर गई।

डी.ए.वी. नबीनगर में स्मृति दिवस का हुआ आयोजन

डी.ए.वी. नबीनगर में महात्मा एन.डी. ग्रोवर की पुण्यतिथि पर स्मृति दिवस का आयोजन किया गया। स्मृति-सभा का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्राचार्य सहित सभी शिक्षकों द्वारा महात्मा एन.डी. ग्रोवर को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. आर.के.दुबे ने ग्रोवर साहब से जुड़ी कई स्मृतियाँ सांझी की। उन्होंने कहा कि महात्मा एन.डी. ग्रोवर एक विराट व्यक्तित्व थे। समाज में गुणात्मक शिक्षा के प्रसार के लिए वे जीवन पर्यन्त सक्रिय रहे। बिहार सहित देश-भर में ढाई सौ से भी ज्यादा डी.ए.वी. संस्थानों के निर्माण और विकास में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका को देखते हुए कहा जा सकता है कि वे एक चलती-फिरती संस्था थे। सभा को छात्र अंकित कुमार, चन्दन कुमार और शिक्षक दिनेश सिंह व संतोष पाण्डेय आदि ने भी सम्बोधित किया। संगीत शिक्षक रंजीत कुमार ने भजन प्रस्तुत किया। महात्मा एन.डी. ग्रोवर के विचारों-भावों को आगे बढ़ाते हुए गरीब बच्चों को शिक्षण सामग्री व खाद्य सामग्री विद्यायल की ओर से प्राचार्य द्वारा प्रदान की गयी। सामूहिक शान्ति पाठ के साथ स्मृति सभा का समापन हुआ।

आर्य युवा समाज हरियाणा ने जीन्द में चलाया "अपना स्कूल" कार्यक्रम

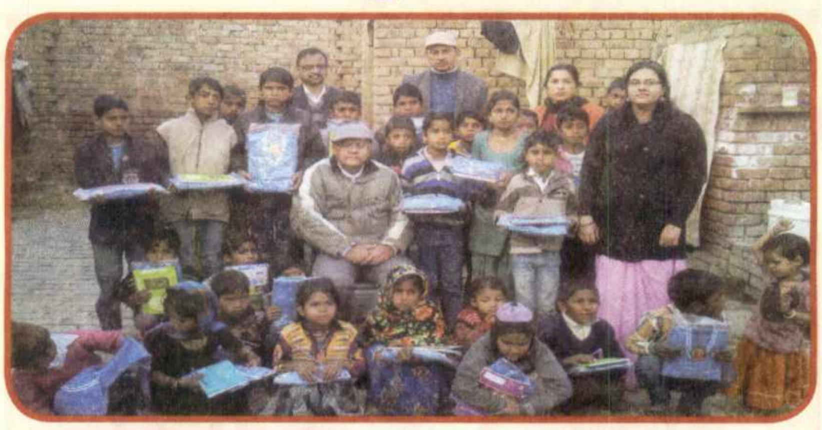

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार आर्य युवा समाज हरियाणा ने जीन्द शहर में गरीब छात्रों के लिए 'अपना स्कूल' कार्यक्रम स्वेच्छा से चलाया है। किसी भी कारण से शिक्षा प्राप्त करने से वंचित बच्चों को शिक्षित करना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। ये बच्चे नितांत गरीब परिवारों से परिवार की कमज़ोर आर्थिक दशा के कारण या तो विद्यालय गए नहीं या एक-दो साल जाने के बाद विद्यालय को बीच में ही छोड़ देते हैं तथा पढ़ाई से दूर चलते जाते हैं। डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल, जीन्द स्थित आर्य युवा समाज के प्रधान डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी के नेतृत्व में स्वयं सेवकों ने जीन्द का एक सर्वेक्षण किया जिसके आधार पर सैकड़ों बच्चे गरीब हालात में शिक्षा से वंचित रह गए। डीएवी संस्था महर्षि दयानन्द सरस्वती के मूल मंत्र शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करने वाली संस्था है। 'महर्षि दयानन्द के अनुयायियों के रहते हुए शहर में काई भी अशिक्षित नहीं रहना चाहिए'-इस पवित्र भावना को लेकर जीन्द में 4 स्थानों पर शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई है इनमें अमरहेड़ी रोड़, विजय नगर, सैक्टर 11 एवं कालवा में यह कार्य 1 जनवरी 2017 से प्रारम्भ किए गया हैं। डी.ए.वी. स्कूल की ज्योति कादयान, पूनम, मीना शर्मा, सविता सांगवान एवम् अशोक कुमार इस कार्यक्रम योगदान दे रहे है। पुस्तकें, कापियाँ तथा वर्दियां दानी महानुभावों के सहयोग से जुटाई हैं। इस समय तक चारों केन्द्रों पर 100 बच्चे विद्याध्ययन कर रहे हैं। मकर संक्राति पर्व पर इन स्थानों का निरीक्षण किया तथा पुस्तके, कापियाँ तथा वर्दियाँ का वितरण भी किया गया।

आर्यवीरों का एक दल मोटर साईकलों पर जायेगा टंकारा

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के उपलक्ष्य आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा एक मोटर साईकिल यात्रा दिल्ली से टंकारा तक (लगभग 2600 कि.मी.) जाएगी।

इस यात्रा में लगभग 100 आर्यवीर भाग ले रहे हैं। जो कि मोटर साईकिलों द्वारा जाएंगे। इनके साथ एक प्रचार वाहन भी जाएगा एवम् आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की भजन मडंली भी साथ होगी।

यह यात्रा मार्ग में अनेक स्थानो रुकती हुई वैदिक प्रचार करते हुए जाएगी।

स्वामी सुमेधानन्द जी (सासंद सीकर राजस्थान) द्वारा प्रशासन को राजस्थान में अनेक स्थानों इस यात्रा के स्वागत एवम् सुरक्षा के समुचित प्रबन्ध किये गए हैं।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 15/16-02-2017
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

आर आर बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज, बटाला में ऋतु परिवर्तन पर यज्ञ का आयोजन हुआ

आर. आर. बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज, बटाला में प्रिंसीपल प्रो. डॉ. (श्रीमती) नीरू चड्डा के निर्देशानुसार श्रीमती राज शर्मा को–आर्डीनेटर एवं प्रो. सुनील दत्त शर्मा को–कोआर्डीनेटर (स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र) के संयोजन में, स्टूडैंट काऊंसिल की इन्चार्ज डॉ. इन्दिरा विर्क के नेतृत्त्व में तथा सुश्री उदेश के सहयोग से ऋतु परिवर्तन पर एक यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री भारत भूषण अग्रवाल वरीष्ट स्थानीय समिति सदस्य विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस यज्ञ के अवसर पर स्टूडैंट काऊंसिल की हैड गर्ल्ज़ रूपाली महेन्दू के नेतृत्व में सभी सदस्यों ने, कॉलेज की समस्त छात्राओं ने, प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग ने भाग लिया। संगीत विभाग की छात्राओं ने भजन गायन प्रस्तुत किया। यज्ञ का सम्पादन प्रो. सुनील दत्त ने किया।

इस यज्ञ में सभी ने वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित आहुति डाल कर सर्वत्र खुशहाली, सुख, शान्ति एवं कुशलता की कामना की। प्रिंसीपल महोदया प्रो. डॉ. (श्रीमती) नीरू चड्डा एवं प्राध्यापकों ने छात्राओं को आशीर्वचन देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं। शान्तिपाठोपरान्त यज्ञ का समापन हुआ।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में दयानन्द मॉडल स्कूल ने मनाया वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

आर्य अनाथालय में स्थित दयानन्द मॉडल हाई स्कूल ने अपना वार्षिक उत्सव एवम् पुरस्कार वितरण समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें फैन्सी ड्रेस, स्कि, गिद्धा और भंगड़ा मुख्य रूप से प्रस्तुत किया गया। डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली के सदस्य एवम् दयानन्द मॉडल हाई स्कूल के चेयरमैन आदरणीय पं. सतीश शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और उन्होंने अपने कर कमलों से बच्चों को आशीर्वाद दिया एवम् इनाम बाँटे। इसके अलावा कक्षाओं में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को गोल्ड व सिल्वर मैडल से भी सम्मानित किया गया। बच्चों का उत्साह देखते हुए मुख्य अतिथि ने उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु कैश प्राईज दिए।

इस स्कूल में बाहर के विद्यार्थियों के साथ आश्रम के भी 100 से अधिक बच्चे शिक्षा ग्रहण करते है। इस अवसर पर स्कूल के लोकल मैनेजिंग कमेटी के सभी वरिष्ठ सदस्य डॉ. के.सी.अरोड़ा, श्रीमती वीणा शर्मा, एवम् श्रीमती रमन डंडोना विशेष तौर पर उपस्थित हुए। समारोह में आए हुए मेहमानों तथा अभिभावकों का धन्यवाद करते हुए डॉ. सतनाम कौर मैनेजर ने बताया कि स्कूल में उच्च स्तर की शिक्षा, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर दी जा रही है, समय–समय पर स्कूल में विशेष कैम्प भी लगाए जाते रहते हैं–जैसे डेन्टल चेकअप, आई चेकअप और जनरल चेकअप आदि। भारत सरकार द्वारा चलाए गए प्रोग्राम जैसे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' और 'स्वच्छ भारत अभियान' डी.सी आफिस जिला फिरोजपुर के सहयोग से स्कूल में आयोजित किया गया।

आए हुए मेहमानों ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए एवम् स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा इस बाल कल्याणकारी संस्था की प्रशंसा की। शांति पाठ के साथ समारोह का समापन किया गया।

जीनियस प्रतियोगिता में बच्चों को किया सम्मानित

कलीराम डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सफीदों के प्रांगण में ग्रामीण प्रतिभा विकास समिति, सोनीपत, एवं साहिल विकलांग सहायतार्थ समिति, दिल्ली के मुख्य आयोजक श्री सतीश राज देशवाल द्वारा "हर बच्चा बन सकता है जीनियस 2016 प्रतियोगिता" के 16 पुरस्कार बाँटे गए। पूरे सफीदों ब्लॉक में प्रथम स्थान लेने वाले छात्र अनीश को टैबलेट से पुरस्कृत किया तथा सौम्या व सिद्धार्थ को साइकिल, नीरज व मानवी को सीलिंग फैन, रणदीप, नौनिध व दीया को एमरजैन्सी लाइट, राजदीप को प्रैस, केशव, शालू, अभिषेक, अंशिका, प्रिंस, योगेश, कनिष्क को एजुकेशनल किट देकर पुरस्कृत किया। श्री सतीश राज देशवाल ने हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि "हमारी संस्था का उद्देश्य हर बच्चे में छिपी प्रतिभा को खोजना है क्योंकि हर बच्चा बन सकता है जीनियस। बच्चे का विकास ही देश का विकास है। डॉ. ए.पी. जे अब्दुल कलाम का विजन आगे बढ़ाना ही हमारा उद्देश्य है–हर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले, अच्छे संस्कार मिलें, उसमें देशभक्ति की भावना विकसित हो और वह प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार हो व उसमें उत्साह का संचार हो।"

प्राचार्या महोदया श्रीमती रश्मि विद्यार्थी ने ब्लॉक स्तर पर प्रथम आने वाले अनीश को विशेष रूप से व सभी पुरस्कृत विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देते हुए अपने प्रेरणादायी सम्बोधन में कहा बच्चों का समय–समय पर उत्साहवर्धन करते रहना चाहिए क्योंकि बचपन ही वह समय होता है जिसमें बच्चों में अच्छे संस्कार व चुनौतियों का मुकाबला करना सिखाया जा सकता है तथा देश का जीनियस व अच्छा नागरिक तैयार किया जा सकता है। बच्चों में प्रतिभा है, जुनून है, हिम्मत है। अनुशासन के साथ यदि वे सही दिशा में बढ़ें तो उनकी सफलता निश्चित है उन्हें कठिनाइयों से घबराना नही चाहिए। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए देश भक्ति दिखानी चाहिए। और प्रतियोगी परीक्षाओ में बढ़–चढ़कर भाग लेकर आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए तथा ज्यादा से ज्यादा पुरस्कार जीतने चाहिएँ। इस अवसर पर स्कूल में उत्साह का माहौल था। सभी अध्यापकों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए एस.के शर्मा द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – पूनम सूरी